साप्ताहिक

सबका जम्मू कश्मीर

आरएनआई न. :- जेकेएचआईएन/25/ए0631

हिन्दी • वर्षः 1 • अंकः 10 • कठुआ, शनिवार 2 अगस्त 2025 • पृष्ठः 16 • मूल्यः 5 रुपए

अमरनाथ यात्रा 4 लाख के पार : एलजी ने सभी हितधारकों का आभार व्यक्त किया

सबका जम्मू कश्मीर

श्रीनगर : उपराज्यपाल श्री मनोज सिन्हा ने आज पवित्र श्री अमरनाथ जी यात्रा के 4 लाख दर्शनों का आंकड़ा पार करने पर यात्रा की व्यवस्था में शामिल सभी हितधारकों के प्रति आभार व्यक्त किया।

उपराज्यपाल ने एक्स पर पोस्ट में कहा, षबाबा अमरनाथ असंभव को संभव बनाते हैं। उनके आशीर्वाद से पवित्र यात्रा आज 4 लाख का आंकड़ा पार कर गई। मैं इस चमत्कार के लिए भगवान शिव को नमन करता हूं और पवित्र तीर्थयात्रा को श्रद्धालुओं के लिए एक दिव्य अनुभव बनाने में शामिल सभी लोगों के प्रति आभार व्यक्त करता हूं।ष

देश-विदेश से आए श्रद्धालुओं का रिकॉर्ड संख्या में दर्शन और आगमन भारत की एकता और चुनौतियों पर विजय पाने के उसके संकल्प का प्रमाण है। मैं उन श्रद्धालुओं का हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने अपार आस्था दिखाई है और हमारी अमूल्य आध्यात्मिक विरासत को सुदृढ़ किया है।

यह ईश्वरीय यात्रा अतुलनीय है, इसलिए नहीं कि यह कठिन और चुनौतीपूर्ण है, बल्कि इसलिए कि यह परमानंद की एक अद्वितीय यात्रा है। यह एक आध्यात्मिक अनुभव है और भक्तों को स्वयं को जानने का अवसर देता है, गहरा विश्वास प्रदान करता है और उनके हृदय को असीम कृतज्ञता से भर देता है।ष

अमरनाथ यात्रा गुरुवार को कश्मीर घाटी में बालटाल मार्ग से पुनः शुरू हो गई, लेकिन खराब मौसम के कारण जम्मू से इसे स्थगित कर दिया गया।

अधिकारियों ने बताया कि आज सुबह जम्मू से दक्षिण कश्मीर हिमालय में स्थित पवित्र गुफा मंदिर तक तीर्थयात्रियों के किसी भी नए जत्थे को जाने की अनुमति नहीं दी गई।

बारिश के बाद अमरनाथ यात्रा मार्ग

■ शेष पेज 2...

पहली बार तकनीकी समस्याओं के कारण पीएफबीआर में देरी हुई : जितेंद्र सिंह

सबका जम्मू कश्मीर

नई दिल्ली : सरकार ने गुरुवार को संसद को बताया कि 500 मेगावाट क्षमता वाले प्रोटोटाइप फास्ट ब्रीडर रिएक्टर (पीएफबीआर) के चालू होने में षपहली तरह की तकनीकी समस्याओंष के कारण देरी हो रही है।

पीएफबीआर की कोर लोडिंग पिछले वर्ष मार्च में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की उपस्थिति में शुरू हुई थी, जो भारत के तीन-चरणीय परमाणु कार्यक्रम के दूसरे चरण की ओर बढ़ने का संकेत था।

पिछले वर्ष जुलाई में परमाणु ऊर्जा नियामक बोर्ड (एईआरबी) ने पीएफबीआर के एकीकृत कमीशनिंग के लिए मंजूरी प्रदान की थी।

प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री जितेंद्र सिंह ने राज्यसभा में एक लिखित उत्तर में कहा,

■ शेष पेज 2...

पहला बड़ा मुद्दा यह है कि रोहिंग्या शरणार्थी हैं या अवैध घुसपैठिए : सुप्रीम कोर्ट

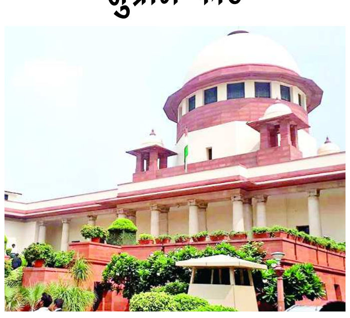

सबका जम्मू कश्मीर

नई दिल्ली : उच्चतम न्याया.लय ने गुरुवार को कहा कि रोहिंग्याओं से संबंधित मामलों में सबसे पहला बड़ा मुद्दा यह है कि वे शरणार्थी हैं या अवैध रूप से प्रवेश करने वाले हैं। न्यायमूर्ति सूर्यकांत, न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता और न्यायमूर्ति एन कोटिश्वर सिंह की पीठ ने कहा कि एक बार यह निर्णय हो जाए तो अन्य मुद्दे भी महत्वपूर्ण हो सकते हैं।

न्यायालय ने देश में रोहिंग्याओं से संबंधित याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए यह टिप्पणी की। न्यायमूर्ति कांत ने कहा, पहला बड़ा मुद्दा सरल है, क्या वे शरणार्थी हैं या अवैध प्रवेशकर्ता हैं। पीठ ने रोहिंग्याओं से संबंधित याचिकाओं में विचार के लिए उठे व्यापक मुद्दों पर ध्यान दिया। पीठ ने कहा, क्या रोहिंग्या शरणार्थी घोषित किए जाने के हकदार हैं? यदि हां, तो उन्हें कौन सी सुरक्षा, विशेषाधिकार या अधिकार प्राप्त हैं?ष

इसमें कहा गया कि दूसरा मुद्दा यह है कि यदि रोहिंग्या शरणार्थी नहीं हैं

■ शेष पेज 2...

मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने गांधीनगर में ट्रैवल एंड टूरिज्म फेयर का किया उद्घाटन, जम्मू-कश्मीर आने का दिया न्योता

सबका जम्मू कश्मीर

गांधीनगर में टीटीएफ का उद्घाटन करते मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला - जम्मू-कश्मीर पवेलियन का अवलोकन करते हुए मुख्यमंत्री

जम्मू । मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने शनिवार को गांधीनगर स्थित महात्मा मंदिर कन्वेंशन सेंटर में ट्रैवल एंड टूरिज्म फेयर का उद्घाटन करते हुए पर्यटकों को जम्मू-कश्मीर की चारों मौसमों में आकर्षक संस्कृति और प्राकृतिक सौंदर्य का अनुभव लेने का खुला आमंत्रण दिया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि जम्मू-कश्मीर न केवल अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और प्राकृतिक खूबसूरती के लिए जाना जाता है, बल्कि अब गुजरात से इसकी बेहतर कनेक्टिविटी भी इसे सालभर का आदर्श पर्यटन स्थल बनाती है।

ज्ज्थ् में जम्मू-कश्मीर से 70 से अधिक पर्यटन क्षेत्र के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। जम्मू-कश्मीर का पवेलियन रोमांचक पर्यटन, तीर्थ यात्रा, विरासत पर्यटन, गोल्फ और फिल्म टूरिज्म की अनूठी झलकियों के कारण दर्शकों के आकर्षण का केंद्र बना रहा।

मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने मेले में मौजूद प्रदर्शकों से मुलाकात की

■ शेष पेज 2...

भारत राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए सभी कदम उठाएगाः अमेरिकी टैरिफ पर गोयल

सबका जम्मू कश्मीर

नई दिल्ली : वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने गुरुवार को कहा कि भारत राष्ट्रीय हिता.ं की रक्षा और उन्हें बढ़ावा देने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाएगा। यह बात अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा एक अगस्त से अमेरिका को घरेलू निर्यात पर 25 प्रतिशत शुल्क और जुर्माना लगाने की घोषणा के एक दिन बाद कही गई।

संसद के दोनों सदनों में स्वप्रेरणा से दिए गए वक्तव्य में उन्होंने कहा कि सरकार इन शुल्कों के प्रभावों की जांच कर रही है तथा स्थिति के आकलन के लिए निर्यातकों और उद्योग सहित

■ शेष पेज 2...

संसद की कार्यवाही से विपक्ष के अनुपस्थित रहने से सरकार को कानून आसानी से पारित कराने में मदद मिलती है : आज़ाद

सबका जम्मू कश्मीर

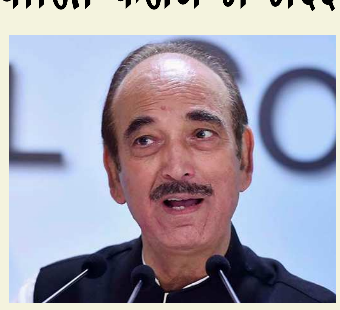

श्रीनगर : पूर्व संसदीय कार्य मंत्री गुलाम नबी आजाद ने गुरुवार को कहा कि संसद को सुचारू रूप से चलने दिया जाना चाहिए क्योंकि विपक्ष द्वारा कार्यवाही से अनुपस्थित रहने से सरकार को ही मदद मिलती है।

उन्होंने कहा, षमैं सदन की कार्यवाही में बाधा डालने के ख़िलाफ़ हूँ। अगर आप सदन को चलने नहीं देते, तो फिर चुने ही क्यों जाते हैं? सदन में आने का मतलब है कि आप संसद में राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय और घरेलू मुद्दों और जनता की समस्याओं को सरकार के सामने उठाएँगे।ष

आजाद की यह टिप्पणी राज्यसभा में विपक्षी दलों के हंगामे के बीच आई है,

■ शेष पेज 2...

साप्ताहिक सबका जम्मू कश्मीर

शेष पेज 1 से.....

अमरनाथ यात्रा 4...

के पहलगाम मार्ग पर रखरखाव कार्यों के मद्देनजर यात्रा केवल बालटाल मार्ग से ही जारी रहेगी।

कश्मीर में मूसलाधार बारिश के कारण सड़कें असुरक्षित हो गई थीं, जिसके बाद बुधवार को बालटाल और पहलगाम दोनों मार्गों पर तीर्थयात्रा स्थगित कर दी गई थी।

एक अधिकारी ने बताया, ष्यात्रा आज सुबह बालटाल मार्ग से फिर से शुरू हो गई।ष् उन्होंने आगे कहा, ष्हाल ही में हुई बारिश के बाद अमरनाथ यात्रा मार्ग के पहलगाम हिस्से पर आवश्यक रखरखाव कार्यों के मद्देनजर यात्रा केवल बालटाल मार्ग से ही जारी रहेगी।ष्

अधिकारी ने बताया कि गुरुवार को जम्मू के भगवती नगर आधार शि. विर से बालटाल और नुनवान आधार शिविरों की ओर किसी भी काफिले को जाने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

जम्मू के संभागीय आयुक्त रमेश कुमार ने बताया कि यात्रा क्षेत्र में भारी बारिश के कारण कश्मीर स्थित आधार शिविरों से तीर्थयात्रियों की आवा. जाही प्रभावित हुई है।

उन्होंने कहा, ष्इसलिए यह निर्णय लिया गया कि 31 जुलाई को भगवती नगर, जम्मू से बालटाल और नुनवान आधार शिविरों की ओर किसी भी काफिले को जाने की अनुमति नहीं दी जाएगी।ष्

तीर्थयात्रियों को शुक्रवार को पहलगाम और बालटाल आधार शिविरा. ें की ओर आगे की यात्रा के लिए उच्च सुरक्षा वाले भगवती नगर आधार शिविर में ठहराया गया है।

यह दूसरी बार है जब यात्रा जम्मू से स्थगित की गई है। 17 जुलाई को कश्मीर के दोनों आधार शिविरों में भारी बारिश के कारण यात्रा स्थगित कर दी गई थी।

घाटी से तीन जुलाई को शुरू हुई 38 दिवसीय तीर्थयात्रा के बाद से अब तक 3.93 लाख से अधिक तीर्थयात्री 3,880 मीटर ऊंचे गुफा मंदिर में भगवान शिव के बर्फ से बने शिवलिंग के दर्शन कर चुके हैं।

2 जुलाई को उपराज्यपाल मनोज सिन्हा द्वारा पहले जत्थे को हरी झंडी दिखाने के बाद से अब तक कुल 1,44,124 तीर्थयात्री जम्मू आधार शिविर से घाटी के लिए रवाना हो चुके हैं।

पिछले वर्ष 5.10 लाख से अधिक तीर्थयात्रियों ने गुफा मंदिर में दर्शन किये थे।

यह तीर्थयात्रा 9 अगस्त को रक्षाबंधन के त्यौहार के साथ समाप्त होगी।

मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला...

और उनकी भागीदारी की सराहना की। इस दौरान उन्होंने गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल से शिष्टाचार भेंट भी की, जहां दोनों नेताअ. ें के बीच राज्य और केंद्रशासित प्रदेशों के बीच आपसी सहयोग और पर्यटन संवर्धन पर चर्चा हुई।

उल्लेखनीय है कि तीन दिवसीय ज्ज्थ् अहमदाबाद में देश–विदेश के 900 से अधिक प्रदर्शक भाग ले रहे हैं। आयोजकों के अनुसार, इस दौरान लगभग 12,500 व्यापारिक प्रतिनिधियों और आगंतुकों के पहुंचने की उम्मीद है। यह मेला पर्यटन क्षेत्र में ठ2ठ नेटवर्किंग का एक प्रमुख मंच बन चुका है।

पहली बार तकनीकी...

ष्प्रोटोटाइप फास्ट ब्रीडर रिएक्टर (पीएफबीआर) परियोजना के पूरा होने में देरी मुख्य रूप से परियोजना के एकीकृत कमीशनिंग चरण में सामने आ रही तकनीकी समस्याओं के कारण है।ष्

उन्होंने कहा कि इन मुद्दों को डिजाइनरों के साथ निकट समन्वय में व्यवस्थित ढंग से हल किया जा रहा है।

पीएफबीआर भारत के परमाणु कार्यक्रम के लिए महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि इन रिएक्टरों से प्राप्त ईंधन का उपयोग थोरियम आधारित रिएक्टरों को बिजली देने के लिए किया जाएगा, जो बंद ईंधन चक्र के तीसरे चरण का निर्माण करते हैं।

भारत पिछले चार दशकों से कलपक्कम में फास्ट ब्रीडर टेस्ट रिएक्टर (एफबीटीआर) का संचालन कर रहा है।

उन्नत भारी जल रिएक्टर (एएचडब्ल्यूआर), जो भारत के परमाणु कार्यक्रम का तीसरा चरण है, के डिजाइन की समीक्षा की जा रही है।

भारत में 8,780 मेगावाट की कुल क्षमता वाले 24 परमाणु ऊर्जा रिएक्टर संचालित हैं। इसके अतिरिक्त, भाविनी द्वारा कार्यान्वित 500 मेगावाट पीएफबीआर सहित कुल 13,600 मेगावाट क्षमता के रिएक्टर कार्यान्वयन के विभिन्न चरणों में हैं।

सिंह ने कहा कि इसके क्रमिक रूप से पूरा होने पर, स्थापित परमाणु ऊर्जा क्षमता 2031–32 तक 22,380 मेगावाट तक पहुंचने की उम्मीद है।

सरकार ने एक महत्वाकांक्षी परमाणु ऊर्जा मिशन की घोषणा की है जिसका लक्ष्य 2047 तक 100 गीगावाट की परमाणु ऊर्जा क्षमता तक पहुंचना है तथा छोटे मॉड्यूलर रिएक्टरों और नई उन्नत प्रौद्योगिकियों में अनुसंधान एवं विकास को सक्षम करने के उपाय करना है।

2047 तक 100 गीगावाट का लक्ष्य सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में मौजूदा और नई उन्नत प्रौद्योगिकियों पर आधारित रिएक्टरों की तैनाती करके प्राप्त करने की योजना है।

भारत राष्ट्रीय...

सभी हितधारकों से फीडबैक ले रही है।

उन्होंने कहा, ष्सरकार हमारे किसानों, श्रमिकों, उद्यमियों, निर्यातकों, एमएसएमई और उद्योग के सभी वर्गों के कल्याण की रक्षा और संवर्धन को सर्वोच्च महत्व देती है। हम अपने राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित और आगे बढ़ाने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाएंगे।ष्

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने बुधवार को घोषणा की कि 1 अगस्त से भारत से आने वाले सभी सामानों पर 25 प्रतिशत टैरिफ लगाया जाएगा, साथ ही रूसी कच्चे तेल और सैन्य उपकरण खरीदने पर अनिर्दिष्ट जुर्माना भी लगाया जाएगा।

यह आश्चर्यजनक घोषणा ऐसे समय में की गई है जब प्रस्तावित द्विपक्षीय व्यापार समझौते पर छठे दौर की वार्ता के लिए अमेरिकी व्यापार दल 25 अगस्त से भारत का दौरा कर रहा है।

गोयल की टिप्पणी महत्वपूर्ण है, क्योंकि भारत ने कृषि और डेयरी क्षेत्रों पर अमेरिका को शुल्क रियायत देने के मामले में अपना रुख कड़ा कर लिया है – जो भारत के साथ व्यापार वार्ता में अमेरिका की एक प्रमुख मांग है।

नई दिल्ली ने अपने पहले हस्ताक्षरित किसी भी समझौते में डेयरी क्षेत्र को कभी नहीं खोला है।

संसद की कार्यवाही...

जिन्होंने सदन में ऑपरेशन सिंदूर पर बहस का जवाब नहीं देने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर विरोध जताया और विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) का मुद्दा भी उठाया।

आज़ाद ने यहां संवाददाताओं से कहा, ष्जब विपक्ष सदन से बहिर्गमन करता है तो सरकार खुश होती है क्योंकि तब वह आसानी से कानून पारित कर सकती है। इसलिए, विपक्ष का बहिर्गमन सरकार के लिए मददगार होता है, वह उनका विरोध नहीं करता।ष्

मनमोहन सिंह सरकार में मई 2004 से नवंबर 2005 तक संसदीय कार्य मंत्री रहे आजाद ने कहा कि वह हमेशा संसद के सुचारू संचालन के पक्षधर रहे हैं।

संसद में अपने पहले कार्यकाल को याद करते हुए आजाद ने कहा कि तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने उन्हें संसद में विपक्षी नेताअ. ें के भाषण में बाधा न डालने की सलाह दी थी।

उन्होंने कहा, ष्इंदिरा ने मुझे बुलाया और कहा, श्आप संसद में बोलने आए हैं, हंगामा करने नहीं।श् उन्होंने मुझसे कहा कि विपक्षी नेता को बोलने न देकर कोई नेता नहीं बन सकता।ष्

22 अप्रैल को पहलगाम हमले पर पूर्ववर्ती जम्मू–कश्मीर राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने सुरक्षा विफलता की जिम्मेदारी ले ली है और यह अध्याय यहीं समाप्त हो जाता है।

उन्होंने आगे कहा, ष्मुझे लगता है कि वह अध्याय बंद हो चुका है। उपराज्यपाल पहले ही इस बारे में कुछ कह चुके हैं और उन्होंने ज़िम्मेदारी स्वीकार कर ली है, इसलिए अब यह मामला बंद हो जाना चाहिए।ष्

हाल ही में सुरक्षा बलों द्वारा पहलगाम हमले के लिए जिम्मेदार तीन आतंकवादियों को मार गिराए जाने के संबंध में ऑपरेशन महादेव पर आजाद ने कहा कि वह सुरक्षा बलों द्वारा चलाए गए हर ऑपरेशन का समर्थन करते हैं, लेकिन मानवाधिकारों का उल्लंघन नहीं होना चाहिए।

उन्होंने कहा, ष्मैंने हमेशा सुरक्षा बलों के हर ऑपरेशन का समर्थन किया है, यहाँ तक कि जब मैं मुख्यमंत्री था तब भी। सुरक्षा बलों को पूरी आज़ादी थी, लेकिन मेरी बस एक शर्त थी कि ऑपरेशन चलते रहें, लेकिन मानवाधिकारों का उल्लंघन या फ़र्ज़ी मुठभेड़ें न हों।ष्

अपनी डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव आजाद पार्टी (डीपीएपी) के भविष्य के बारे में पूर्व केंद्रीय मंत्री ने कहा कि वह इस पर निर्णय लेंगे कि इसे जारी रखना है या नहीं।

उन्होंने अपनी पार्टी के वरिष्ठ नेताओं के पार्टी छोड़ने का ज़िक्र करते हुए कहा, ष्यह एक पुरानी

बीमारी है कि जब कोई मंत्री बनता है, तो वह जीते जी मंत्री ही रहना चाहता है। इसलिए, वह एक पार्टी से दूसरी पार्टी में जाता रहता है, और मंत्री बनने तक ऐसा करता रहेगा।ष्

ष्लेकिन, जो (मंत्री) नहीं थे और डीडीसी, बीडीसी थे, उनकी पार्टी में शामिल होने वालों की संख्या तीन गुना बढ़ गई है। मुझे तय करना है कि इसे (पार्टी को) चलाना जारी रखूँ या छोड़ दूँ, क्योंकि कश्मीर में राजनीति ज़्यादातर भावनाओं पर चलती है।

उन्होंने आगे कहा, ष्मेरी राजनीति सत्य और अहिंसा पर आधारित है। मैं चुनाव में और बाकी जगहों पर भी एक ही बात बोलता हूँ, चाहे वह जम्मू हो, दिल्ली हो या श्रीनगर। लोग चाहते हैं कि मैं अलग–अलग जगहों पर अलग–अलग बातें बोलूँ, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकता।ष्

ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध विराम कराने के अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के दावे पर आजाद ने कहा कि उनके पास प्रधानमंत्री मोदी पर विश्वास न करने का कोई कारण नहीं है।

ष्दुर्भाग्य से, ट्रम्प बहुत सी बातें बोलते हैं। इसलिए, यह बहुत मुश्किल है। प्रधानमंत्री ने सदन में स्पष्ट कर दिया है कि यह हमारा अपना निर्णय था और किसी देश ने इसमें हस्तक्षेप नहीं किया। उन्होंने अमेरिका के उपराष्ट्रपति के साथ अपनी बातचीत का भी ज़िक्र किया है, जिसके साथ ही यह अध्याय समाप्त हो गया है।ष्

डीपीएपी प्रमुख ने कहा, ष्मुझे लगता है कि हमारे पास अपने प्रधानमंत्री पर विश्वास न करने का कोई कारण नहीं है। वह देश के निर्वाचित प्रधानमंत्री हैं।

पहला बड़ा मुद्दा...

और अवैध रूप से प्रवेश कर रहे हैं, तो क्या उन्हें निर्वासित करने की केंद्र और राज्यों की कार्रवाई उचित थी।

इसमें पूछा गया है, ष्यदि रोहिंग्याओं को अवैध प्रवेशकर्ता भी माना गया है, तो क्या उन्हें अनिश्चित काल तक हिरासत में रखा जा सकता है या वे जमानत पर रिहा किए जाने के हकदार हैं, बशर्ते कि अदालत ऐसी शर्तें लागू करे?ष्

अदालत ने कहा कि याचिकाओं में उठाया गया दूसरा मुद्दा यह है कि क्या रोहिंग्याओं को, जिन्हें हिरासत में नहीं लिया गया है और जो शरणार्थी शिविरों में रह रहे हैं, पेयजल, स्वच्छता और शिक्षा जैसी बुनियादी सुविधाएं प्रदान की गई हैं।

इसमें कहा गया है, ष्यदि रोहिंग्या अवैध रूप से प्रवेश कर रहे हैं, तो क्या भारत सरकार और राज्य सरकारें कानून के अनुसार उन्हें निर्वासित करने के लिए बाध्य हैं।ष्

पीठ ने याचिकाओं को तीन समूहों में विभाजित किया – एक रोहिंग्याओं से संबंधित, दूसरी रोहिंग्याओं के मुद्दे से संबंधित नहीं तथा एक याचिका जिसके बारे में उसने कहा कि वह पूरी तरह से अलग मामले से संबंधित है।

न्यायालय ने कहा कि मामलों के तीन समूहों का निर्धारण अलग–अलग किया जाएगा तथा उन पर सुनवाई लगातार बुधवार को निर्धारित की जाएगी।

पीठ ने संकेत दिया कि जो लोग अवैध रूप से प्रवेश करते पाए गए हैं, तथा उन्हें निर्वासित करने की राज्य की जिम्मेदारी के प्रश्न पर, वह केवल सिद्धांत निर्धारित कर सकती है।

सुनवाई के दौरान पीठ ने पूछा कि इन याचिकाओं को सुनवाई के लिए क्यों टैग किया गया है।

याचिकाकर्ताओं की ओर से पेश वकील ने कहा कि याचिकाओं में कई मुद्दे एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और मुख्य मुद्दों में से एक रोहिंग्याओं को हिरासत में लिए जाने से संबंधित है।

एक वकील ने कहा कि रोहिंग्याओं को अनिश्चित काल तक हिरासत में नहीं रखा जा सकता।

16 मई को, सर्वोच्च न्यायालय ने कुछ याचिकाकर्ताओं को फटकार लगाई थी, जिन्होंने दावा किया था कि महिलाओं और बच्चों सहित 43 रोहिंग्या शरणार्थियों को म्यांमार वापस भेजने के लिए अंडमान सागर में छोड़ दिया गया था और कहा था कि ष्जब देश कठिन समय से गुजर रहा है, तो आप काल्पनिक विचार लेकर आते हैं।ष्

इसने याचिकाकर्ता मोहम्मद इस्माइल और अन्य द्वारा उसके समक्ष प्रस्तुत सामग्री की प्रामाणिकता पर सवाल उठाया था और रोहिंग्याओं के आगे निर्वासन पर रोक लगाने से इनकार कर दिया था, यह कहते हुए कि अदालत ने पहले भी इसी तरह की राहत देने से इनकार कर दिया था।

8 मई को शीर्ष अदालत ने कहा था कि यदि देश में रोहिंग्या शरणार्थी भारतीय कानूनों के तहत विदेशी पाए जाते हैं तो उन्हें निर्वासित किया जाएगा।

इसके बाद न्यायालय ने अपने पहले के आदेश का हवाला देते हुए टिप्पणी की थी कि संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्चायुक्त (यूएनएचसीआर) द्वारा जारी किए गए पहचान पत्र, कानून के तहत उनके लिए कोई मददगार नहीं हो सकते हैं।

12 नहीं 4 माह से ही बोलना सीख लेते हैं बच्चे, रिसर्च में दावा

एजेंसी

अक्सर हम देखते हैं कि जब दो लोग बात कर रहे होते हैं को छोटे बच्चे काफी ध्यान से देखता है. वो बातें तो नहीं समझ पाता लेकिन उनकी आवाज उनकी ध्वनि उसके कानों तक जरूर पहुंचती है. इस दौरान वो मुंह से निकलने वाली ध्वनियों को समझ रहा होता है बल्कि वो ये भी सीख रहा होता है कि ये आखिर कैसे ध्वनियां कैसे बनती हैं. धीरे–धीरे बच्चा बड़ा होता है और वो इन चीजों को समझ जाता है फिर बोलना सीख लेता है. डेवलपमेंटल साइंस' में प्रकाशितएक अध्यन से पता चलता है कि ध्वनियों को सीखने की ये ललक बच्चे में चार माह की उम्र में ही जागने लगती है. इससे पहले माना जाता रहा है कि बच्चे छह से 12 माह की उम्र के बीच अपनी मूल भाषा सीखने के बाद ही ध्वनियों पर गौर करना शुरू करते हैं, लेकिन इस अध्ययन से यह धारणा दूर हो गई. बच्चे धीरे–धीरे एक एक शब्द को बोलना साखते हैं. जिसकी शुरुआत सरल शब्दों से होती है. हम देखते हैं कि सबसे पहले बच्चे, मां, पापा जैसे शब्द बोलते हैं जो उनके लिए सरल और आसान होते हैं.

एक साल का होने तक बच्चे अपनी स्थानीय भाषा की ध्वनियों के प्रति काफी समझ रखने लगते हैं जिसे परसेप्टिक अटैचमेंट कहा जाता है. यानी उन्हें समस्वरता के बारे में पता चलने लगता है. उनका दिमाग ध्वनियों के समूह में से उन ध्वनियों पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश कर रहा होता है जो सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं.

सबका जम्मू कश्मीर के आठवें संस्करण पर भाजपा जिला मीडिया सचिव रविंद्र सिंह सलाथिया ने दी शुभकामनाएं

सबका जम्मू कश्मीर

"निष्पक्ष और सटीक पत्रकारिता लोकतंत्र की रीढ़ है" – भाजपा जिला मीडिया सचिव रविंद्र सिंह सलाथिया

"सबका जम्मू कश्मीर" साप्ताहिक समाचार पत्र की प्रति पढ़ते भाजपा जिला मीडिया सचिव रविंद्र सिंह सलाथिया।

कठुआ : सबका जम्मू कश्मीर हिंदी साप्ताहिक समाचार पत्र का आठवां संस्करण शनिवार को प्रकाशित होने के उपरांत सम्पादक राज कुमार ने भाजपा जिला मीडिया सचिव रविंद्र सिंह सलाथिया से औपचारिक भेंट की। इस अवसर पर उन्होंने समाचार पत्र की प्रति सादर भेंट की।

रविंद्र सिंह सलाथिया ने समाचार पत्र की नवीनतम प्रति देखकर प्रसन्नता व्यक्त की और इसके सफल प्रकाशन पर सम्पूर्ण टीम को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहारू

"निष्पक्ष और सटीक पत्रकारिता लोकतंत्र की रीढ़ होती है।

'सबका जम्मू कश्मीर' जैसा प्रयास समाज में जागरूकता और सकारात्मक बदलाव लाने की दिशा में अत्यंत सराहनीय है।"

सम्पादक राज कुमार ने बताया कि इस समाचार पत्र का उद्देश्य निष्पक्ष पत्रकारिता को बढ़ावा देना तथा आम जनता की समस्याओं व आवाज को एक सशक्त मंच प्रदान करना है। उन्होंने यह भी कहा कि यह प्रयास आगे भी और अधिक प्रभावी रूप में जारी रहेगा।

गौरतलब है कि ष्सबका जम्मू कश्मीरष् समाचार पत्र का रजिस्ट्रेशन होने के बाद इसकी पहली प्रति 31 मई को प्रकाशित हुई थी। इसके उपरांत लगातार आठ संस्करण पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किए जा चुके हैं, जिनमें सामाजिक, सांस्कृतिक, स्थानीय व क्षेत्रीय समाचारों के साथ विकासात्मक विषयों को भी प्रमुखता दी जा रही है।

झारखंड में मिला 14 करोड़ साल पुराना 'खजाना', देखते ही खुशी से उछल पड़े वैज्ञानिक, बताया क्या होगा इससे फायदा

एजेंसी

झारखंड में भूवैज्ञानिकों के हाथ एक अनोखा 'खजाना' लगा है, जो कि 14.5 करोड़ साल पुराना बताया जा रहा है. भूविज्ञानी डॉ. रंजीत कुमार सिंह और वन रेंजर रामचंद्र पासवान ने इस बारे में जानकारी दी. उन्होंने बताा कि मंगलवार को पाकुड़ जिले के बरमसिया गांव में एक महत्वपूर्ण खोज सामने आई हैं. यहां पर एक पेट्रोफाइड जीवाश्म की खोज की गई है. टीम ने एक विशाल वृक्ष के जीवाश्मकृत अवशेषों को पहचाना, जो 10 से 14.5 करोड़ वर्ष पूर्व के हो सकते हैं. यह खोज न केवल वैज्ञानिक समुदाय के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि स्थानीय समुदाय के लिए भी गर्व का विषय है, क्योंकि यह क्षेत्र की प्राचीन प्राकृतिक विरासत को उजागर करता है. यह जैविक इतिहास को समझने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है.

डॉ. सिंह ने बताया कि इस क्षेत्र में और भी अनुसंधान की आवश्यकता है ताकि जीवाश्म की सटीक आयु और उसके पर्यावरणीय संदर्भ को समझा जा सके. उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि इस क्षेत्र को संरक्षित किया जाना चाहिए ताकि भविष्य की पीढ़ियां भी इस महत्वपूर्ण विरासत का अध्ययन और सराहना कर सकें.

इस खोज का क्या हो सकता है फायदा?

वन रेंजर रामचंद्र पासवान ने स्थानीय समुदाय से अपील की है कि वे इस क्षेत्र की सुरक्षा में सहयोग करें और किसी भी अवैध गतिविधि से बचें जो इस महत्वपूर्ण स्थल को नुकसान पहुंचा सकती हैं. उन्होंने यह भी कहा कि इस खोज से क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा मिल सकता है, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को लाभ होगा. इस खोज के बाद भू–वैज्ञानिक व प्रकृति पर्यावरण के शोधार्थी व अन्य इस क्षेत्र का विस्तृत सर्वेक्षण अध्ययन करने की योजना बनाई है, ताकि और भी महत्वपूर्ण जानकारियां एकत्रित की जा सकें और क्षेत्र की भू वैज्ञानिक हलचल घटना पर्यावरण संरक्षण जैव विविधता और भूवैज्ञानिक इतिहास को संरक्षित किया जा सके.

आसपास की चट्टानों से बिल्कुल अलग

डॉ. रणजीत कुमार सिंह का मानना है कि पाकुड़ जिला पेट्रोफाइड फॉसिल का धनी है. बताया कि इस क्षेत्र के विज्ञान और वैज्ञानिक समझ में रूचि रखने वाले आम लोगों के लिए संरक्षित और संरक्षित करने की सख्त जरूरत है.

इसे लेकर झारखंड वन विभाग के प्रभागीय वनाधिकारी मनीष तिवारी के साथ भू–विरासत विकास योजना का प्रस्ताव रखा जा रहा है. बताया कि स्थानीय ग्रामीणों, प्रशासकों, वन विभाग, झारखंड राज्य के इकोटूरिज्म के साथ बातचीत की और इस क्षेत्र में एक अलग जियोपार्क कैसे विक. सित किया जा सकता है, इस पर चर्चा की जा रही है.

सर्वसम्मति से बना नगरी व्यापार मंडल का नया प्रधान, अन्य पदाधिकारियों की टीम भी घोषित

नव नियुक्त प्रधान खेम सिंह ने जताया आभार, कहाकृदुकानदारों की समस्याओं का होगा प्राथमिकता से समाधान

नगरी दुकानदारों की ओर से व्यापार मंडल का प्रधान व नई टीम चुनने के बाद एक साथ फोटो खिंचवाते दुकानदार

राज कुमार

नगरी, कस्बा नगरी के व्यापारियों ने शुक्रवार को कम्युनिटी हॉल में बैठक आयोजित कर सर्वसम्मति से व्यापार मंडल की नई कार्यकारिणी का गठन किया। लंबे विचार–विमर्श और सामूहिक सहमति के बाद नई टीम की घोषणा की गई, जिसे व्यापारियों ने खुले दिल से समर्थन दिया। इस प्रक्रिया में खेम सिंह उर्फ पिंकू को प्रधान, अनिल पूरी उर्फ संजू पूरी को जर्नल सेक्रेटरी, अजय शर्मा उर्फ बिल्लू शर्मा को उपप्रधान, और व्यास देव को कोषाध्यक्ष चुना गया। इस मौके पर नव नियुक्त प्रधान खेम सिंह ने मीडिया से बात करते हुए कहा, "मैं सबसे पहले सभी नगरी के दुकानदारों का आभार प्रकट करता हूं जिन्होंने मुझ पर भरोसा जताया और मुझे व्यापार मंडल का नेतृत्व सौंपा। नगरी के दुकानदारों की कई महत्वपूर्ण समस्याएं हैं, जिन्हें हम आने वाले समय में प्राथमिकता से सुलझाने का प्रयास करेंगे, ताकि सभी व्यापारी बेहतर तरीके से व्यापार कर सकें और अपने परिवार का पालन–पोषण सम्मानपूर्वक कर सकें।"

वहीं उपप्रधान अजय शर्मा उर्फ बिल्लू, जर्नल सेक्रेटरी अनिल पूरी और कोषाध्यक्ष व्यास देव ने भी संयुक्त रूप से सभी व्यापारियों का धन्यवाद किया और भरोसा दिलाया कि वे अपनी जिम्मेदारियों को पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ निभाएंगे। "हम पूरी कोशिश करेंगे कि व्यापारियों की उम्मीदों पर खरा उतरें," उन्होंने कहा। इस अवसर पर पूर्व प्रधान तृप्ति शर्मा ने भी नवगठित टीम को बधाई दी और कहा, "मुझे पूर्ण विश्वास है कि नई टीम मेरे कार्यकाल में शुरू किए गए कार्यों को आगे बढ़ाएगी और व्यापारियों की समस्याओं को प्राथमिकता देगी। मैं उन्हें उनके कार्यकाल के लिए शुभकामनाएं देती हूं।" व्यापार मंडल के इस शांतिपूर्ण और सामूहिक निर्णय से कस्बे में सकारात्मक वातावरण बना है और व्यापारी वर्ग नए नेतृत्व से आशान्वित है।

सांप के जहर का टेस्ट कैसा होता है? मौत के मुंह से बाहर निकले इस शख्स ने किया खुलासा

एजेंसी

सांप के विष का टेस्ट कैसा होता है? ब्रिटेन के रेव पार्टी में जाने वाले एक शख्स ने इसका खुलासा किया है. 23 साल के इस शख्स केटामाइन के लत से डॉक्टरों ने बाहर निकाला है. पुलिस और परिवार का कहना है कि यह शख्स जहरीले नशे के लिए रोज करीब 9 हजार रुपए खर्च कर रहा था. द मिरर की रिपोर्ट के मुताबिक डरहम के फर्गस थॉम्पसन नामक शख्स 17 साल की उम्र से ही रेव पार्टी में जाने लगा. यहां उसने दोस्तों के साथ सांप के जहर जैसे केटामाइन का इस्तेमाल करने लगा. केटामाइन के इस्तेमाल पर फर्गस हर महीने करीब 2 लाख 66 हजार रुपए खर्च करता था.

केटामाइन जहर और सांप का विष

यह एक जहर है, जो किसी दर्द को राहत देने के लिए दिया जाता है. साइंस पत्रिका के मुताबिक अफ्रीकी देशों में इसका इस्तेमाल सांप के जहर को खत्म करने के लिए किया जाता है. सांप के विष में आम तौर पर हीमोटॉक्सिक या न्यूरोटॉक्सिक पदार्थ होता है, जिसे केटामाइन आसानी से खत्म कर देता है. मान्य है कि इसके भीतर सांप के जहर इतना ही विष होता है.

दुनिया के कई देशों में सार्वजनिक तौर पर इसके सेवन पर प्रतिबंध लगाया गया है. इसे खतरनाक ड्रग्स माना जाता है.

फर्गस ने क्या–क्या बताया?

रिपोर्ट के मुताबिक सांप के विष जैसे पदार्थ को लेने के बाद उसे खूब नींद आती थी. धीरे–धीरे इसके सेवन की रफ्तार में भी बढ़ोतरी हुई. कुछ ही दिनों के भीतर उसके मूत्राशय में दिक्कत आ गई. देखते ही देखते उसके पूरे शरीर को केटामाइन ने चपेट में ले लिया.

फर्गस के मुताबिक इसके इस्तेमाल की वजह से उनके शरीर का मांस धीरे–धीरे खत्म होने लगा. पूरा शरीर कंकाल में तब्दील हो गया. मैं बेड से उठ नहीं पा रहा था, जिसके बाद डॉक्टरों ने मेरे मरने की भविष्यवाणी कर दी. फर्गस के मुताबिक एक महीने तक मेरा इलाज चला, जिसके बाद मैं अब सुधार महसूस कर रहा है.

साप्ताहिक
सबका जम्मू कश्मीर

विधायक राजीव जसरोटिया व पत्नी अरूणा ने दुर्गा माता मंदिर बरवाल में करवाया कीर्तन और भंडारा

सैकड़ों श्रद्धालुओं ने की शिरकत, क्षेत्र की शांति और खुशहाली की मांगी दुआ

सबका जम्मू कश्मीर

जसरोटा : बरवाल स्थित दुर्गा माता मंदिर में शुक्रवार को एक भव्य धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम विधायक राजीव जसरोटिया और उनकी पत्नी अरुणा जसरोटिया की ओर से करवाया गया, जिसम. कीर्तन और भंडारे का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे। कीर्तन के दौरान भजन–कीर्तन गूंजते रहे और श्रद्धालु भक्ति में लीन नजर आए।

इसके बाद सभी के लिए भंडारा लगाया गया, जिसमें लोगों ने एक साथ बैठकर प्रसाद ग्रहण किया।

राजीव जसरोटिया ने इस मौके पर कहा कि कार्यक्रम का मकसद माता रानी से जम्मू–कश्मीर में शांति, विकास और भाईचारे की दुआ मांगना है। उन्होंने खास तौर पर अपने विधानसभा क्षेत्र जसरोटा की सुख–शांति, तरक्की और जनता की भलाई की प्रार्थना की।

उन्होंने कहा कि ऐसे कार्यक्रम लोगों को जोड़ते हैं और समाज में आपसी भाईचारा बढ़ाते हैं।

कार्यक्रम में गांव के लोगों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया और इसे सफल बनाया। राजीव जसरोटिया ने कहा कि वो अपने क्षेत्र के विकास और जनता की सेवा के लिए लगातार काम कर रहे हैं और भविष्य में भी इसी तरह काम करते रहेंगे।

न चीन न अमेरिका... भारत न होता तो कभी चांद पर न पहुंचती दुनिया

एजेंसी

चांद पर पहुंचने की होड़ लगी है, अमेरिका, रूस चीन और भारत ये चार देश ऐसे हैं जो चंद्रमा पर सॉफ्ट लैंडिंग कर चुके हैं, बेशक इस होड़ में भारत चौथे स्थान पर रहा, लेकिन अगर भारत न होता तो बाकी तीनों देश कभी चांद पर नहीं पहुंच पाते. सुनने में भले ही ये अटपटा लगे लेकिन ये ऐसा सच है जिसे दुनिया भी मानती है. दरअसल एक समय ऐसा था जब न चांद से धरती की दूसरी के बारे में अंदाजा था और न ही इसकी गणना करने का तंत्र, मगर भारत के महान गणितज्ञ आर्यभट्ट ने दशमलव की खोज करके ये गणना आसान कर दी थी. दशमलव ही वो खोज थी, जिसने दुनिया के कई देशों के लिए चांद पर पहुंचने का रास्ता बनाया. आइए समझते हैं कैसे.

1–सटीक गणना

स्पेस से संबंधित जो भी गणनाएं हैं वे बहुत ही सटीक होना जरूरी है, ऐसा दशमलव से ही संभव है, क्योंकि किसी भी अंतरिक्ष अभियान में गलती की कोई गुंजाइश नहीं होती. ऑर्बिट की स्थिति, उपग्रहों की गति, रॉकेट में ईंधन की मात्रा, लैंडिंग साइड समेत तमाम चीजों की गणना दशमलव से ही की जाती है. उदाहरण के लिए अगर चांद पर कोई मिशन भेजा गया, उसमें एक दशमलव की भी गलती हुई तो वो मिशन को असफल कर सकती है.

2– नेविगेशन में महत्व

किसी भी स्पेस यान और सैटेलाइट की ऑर्बिट निर्धारित करने के लिए न्यूटन और कैपलर के नियमों के आधार पर गणनाएं होती हैं, इनमें भी दशमलव सबसे महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि यदि इसमें गलती हुई तो स्पेसक्राफ्ट अपने लक्ष्य से भटक जाएगा और मिशन बेकार जाएगा.

3– समय की गणना

स्पेस में समय की गणना नैनो सेकेंड में होती है नैनो सेकेंड यानी 0.000000001 सेकंड तक इसकी गणना करना दशमलव के बिना संभव ही नहीं है, इसके अलावा ट्रांसमिशन में भी दशमलव का बहुत महत्व है, इससे ही स्पेस से कोई भी सूचना या जानकारी धरती तक पहुंचती है.

4– रॉकेट साइंस और फ्यूल

किसी भी रॉकेट को उसके लक्ष्य के हिसाब से तय समय पर ही लॉन्च किया जाता है, मसलन अगर इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन तक कोई रॉकेट जाएगा तो ये देखा जाएगा कि यह स्पेस स्टेशन धरती के सबसे करीब कब होगा. इस लिहाज से रॉकेट को उस समय पर लॉन्च किया जाएगा, कि जब तक ये आईएसएस तक पहुंचे तब तक स्पेस स्टेशन धरती के करीब हो, इसकी गणना के लिए जो मैथड अपनाया जाता है वह दशमलव के बिना संभव नहीं.

मॉर्निंग वॉक पर जाते समय की ये गलतियां, तो नहीं होगा फायदा

एजेंसी

मॉर्निंग वॉक पर जाना सेहत के लिए बहुत फायदेमंद होता है. लेकिन इस दौरान की गई किसी गलती के कारण आपको वॉक से सही फायदा नहीं मिल पाता है. इसलिए वॉक पर जाते समय इन गलतियों को करने से बचें.

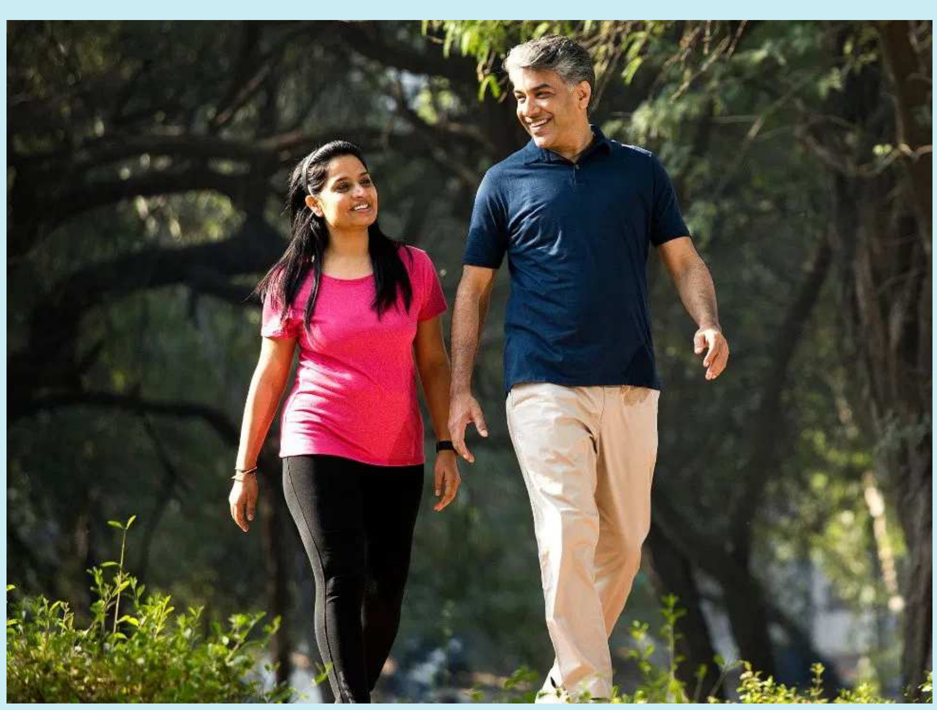

इस भाग–दौड़ से भरी जिंदगी में खुद के लिए समय निकालना मुश्किल हो गया है. अपने बिजी लाइफस्टाइल के कारण लोग अपनी सेहत को नजर. अंदाज करते रहते हैं. लेकिन अपने लिए कुछ समय निकालना बहुत जरूरी है, जिससे आपको फिट रहने में भी मदद मिले. ऐसे में कई लोग सुबह उठकर मॉर्निंग वॉक पर जाना पसंद सकते हैं. खुली हवा में घूमने से अच्छा महसूस भी होता है और इससे फिट रहने में भी मदद मिलती है.

वॉक पर जाना हर उम्र के लोगों के लिए फायदेमंद होता है. तभी कहा जाता है कि अगर आप एक्सरसाइज नहीं कर सकते तो आप कुछ देर वॉक पर भी जा सकते हैं. पर क्या आप जानते हैं कि कोई भी वर्कआउट शुरू करने से पहले आपको उसे करने का सही तरीका पता होना चाहिए. इसी तरह मॉर्निंग वॉक के समय में आपको कुछ बातों का ख्याल रखना चाहिए. क्योंकि इन गलतियों को दोहराने से वॉक से फायदे की जगह पर नुकसान भी हो सकता है.

पानी न पीना

अक्सर लोग वॉक पर जाने से पहले पानी पीना भूल जाते हैं. यह इसलिए हो सकता है कि आपको प्यास न लगी हो, लेकिन क्या आप जानते हैं डिहाइड्रेशन से आपकी सेहत को नुकसान पहुंच सकता है.

इसके कारण सिर में दर्द, चक्कर, थकान और पाचन से जुड़ी समस्या हो सकती है. किसी भी तरह का वर्कआउट करने से पहले पानी पीने से शरीर हाइड्रेटेड रहेगा और आप बेहतर तरीके से उस एक्सरसाइज को कर सकते हैं और ऐसा करने से आपके शरीर को ज्यादा फायदा भी होगा.

खाली पेट वॉक पर जाना

ज्यादातर लोग सुबह उठते ही खाली पेट वॉक करने जाते हैं. लेकिन इससे पहले आपको कुछ खाना चाहिए. अगर आपको भी लगता है वॉक तो खाली पेट ही करनी चाहिए तो यह सही नहीं हैं. जो लोग सुबह उठते ही थकान महसूस करते हैं उन्हें वॉक पर जाने से पहले कुछ खाकर जाना चाहिए. अगर आपकी शुगर लो रहती या जल्दी थकावट महसूस होती है तो बिना कुछ खाए वॉक पर जाने से आपक. ो कमजोरी महसूस या चक्कर आने जैसी समस्या हो सकती है.

आप सुबह कुछ ऐसी चीजें खा सकते हैं जिससे आपके शरीर को एनर्जी मिले. आप लाइट वेटफल खाने के बाद वॉक पर जाएं तो ज्यादा सही होगा.

कॉफी पीना

कुछ लोग अपने दिन की शुरुआत कॉफी से करना पसंद करते हैं लेकिन अगर आप वॉक पर जा रहे हैं तो आपको कॉफी नहीं पीनी चाहिए. क्योंकि कॉफी में मौजूद कैफीन आपको डिहाइड्रेटेड फील करवा सकता है. खाली पेट कॉफी पीने से आपको एसिडिटी और अपच की समस्या हो सकती है जो आपकी वॉक को बोरिंग बना सकती है.

इन बातों का रखें ध्यान

वॉक पर जाते समय आपको कंफर्टेबल जूते और कपड़े पहनने चाहिए. साथ ही वॉक करते समय अपने साथ पानी भी लेकर जाना चाहिए. इसके अलावा अगर आप ब्रिस्क वॉक कर रहे हैं तो उससे पहले 5 मिनट के लिए स्ट्रेचिंग करना फायदेमंद होता है. साथ ही सही स्पीड में वॉक करें. जिससे आपको जल्दी थकावट न हो.

कहीं आप गर्मियों में गलत समय तो नहीं कर रहे वॉक? जानें सही टाइम

एजेंसी

फिट रहने के लिए अमूमन लोग वॉक पर जाते हैं. गर्मियों के मौसम में भी अक्सर लोग शाम के समय या सुबह वॉक करते हैं. लेकिन क्या आप जानते हैं कि गर्मियों में वॉक करने का सही समय क्या है? चलिए इस आर्टिकल में आपको बताते हैं.

वजन घटाने या खुद को फिट रखने के लिए अमूमन लोग वॉक करते हैं. कुछ लोग मॉर्निंग वॉक पर जाते हैं तो कुछ इविनिंग वॉक करते हैं. वॉक करने के कई फायदे भी हैं. इससे स्ट्रेस कम होता है, पाचन तंत्र दुरुस्त रहता है और शरीर को फिट रखने में भी मदद मिलती है. लेकिन अक्सर लोग गर्मियों के मौसम में गलत समय पर वॉक करने निकल जाते हैं , जो उनके फायदे के बजाए नुकसान पहुंचा सकता है.

ऐसे में आपको ये जानना जरूर है कि गर्मियों में वॉक करने का सही समय क्या है. तो चलिए इस आर्टिकल में आपको बताते हैं कि गर्मियों में किस समय वॉक करनी चाहिए? साथ ही सही टाइम चुनने पर शरीर को क्या-क्या फायदे मिलते हैं.

गर्मियों में वॉक करने का सही समय?

गर्मियों के मौसम में वॉक करने का सबसे अच्छा समय सुबह का होता है. आप सुबह 5 बजे से 7 बजे कर वॉक पर जा सकते हैं. इस समय धूप, गर्मी और उमस कम होती है. वहीं अगर आप शाम के समय में वॉक करना पसंद करते हैं तो आपको 6रू 30 के बाद ही वॉक करनी चाहिए. इस समय सूरज डूब जाता है और गर्मी भी थोड़ी कम हो जाती है.

सुबह के समय वॉक करने के फायदे

अगर आप सुबह के समय यानी 5 से 7 बजे के बीच वॉक करते हैं तो इससे शरीर को विटामिन डी मिलने में मदद मिलती है, जिससे मेटाबॉलिज्म भी बेहतर रहता है. इस समय हवा में पॉल्युशन भी कम होता है और मौसम भी अच्छा रहता है. सुबह की वॉक डाइजेस्टिव सिस्टम को भी बेहतर बनाती है, जिससे कब्ज जैसी समस्याएं से राहत मिलती है.

शाम के समय वॉक करने के फायदे

शाम के समय में वॉक करने से शरीर को ठंडक मिलती है क्योंकि इस धूप नहीं होती और मौसम में गर्मी भी थोड़ी कम हो जाती है. शाम की वॉक दिनभर की थकान और स्ट्रेस को कम करने में भी हेल्प करती है.

वॉक करते समय ध्यान रखने वाली बातें

हाइड्रेट रहें- जब भी आप मॉर्निंग या इविनिंग वॉक पर जाएं तो हमेशा अपने साथ एक पानी की बोतल लेकर जाएं और थोड़ी-थोड़ी देर पर पानी पीते रहें. लगातार चलने की वजह से शरीर से पसीना बहता जिससे डिहाइड्रेशन हो सकती है. हाथों को स्विंग करें- वॉक करते समय अक्सर कुछ लोग हाथों को हिलाते नहीं है. जबकि वॉकिंग के दौरान हाथों को स्विंग करते रहना चाहिए. ऐसा करने से पूरा शरीर एक्टिव रहता है.

मोबाइन फोन का न करें इस्तेमाल- कुछ लोगों को वॉक करते समय मोबाइल चलाने की आदत होती है, जो सही नही है. क्योंकि चलते वक्त नीचे देखते हुए मोबाइल चलाने से बॉडी पोस्चर खराब हो सकता है.

गर्मी में पपीता खाना चाहिए या नहीं? जानें इसके फायदे और नुकसान

एजेंसी

पपीता सेहत के लिए बहुत फायदेमंद होता है, खासकर के कब्ज जैसी समस्या में इसे खाने की सलाह दी जाती है. लेकिन पपीता की तासीर गर्म होती है. ऐसे में इसे गर्मी में खाने फायदेमंद होता है या नहीं, आइए जानते हैं इसके बारे में एक्सपर्ट से

पेट से जुड़ी समस्या में केला और पपीते जैसे फल खाने की सलाह दी जाती है. पपीता में पपैन नाम का एंजाइम होता है, जो प्रोटीन को तोड़ने में मदद करता है और इससे पाचन को बेहतर बनाने में मदद मिलती है. ऐसे में जिन लोगों को कब्ज की समस्या रहती है उन्हें पपीता खाने की सलाह दी जाती है. यह और भी कई तरह से सेहत के लिए फायदेमंद होता है.

लेकिन पपीते की तासीर गर्म होती है. ऐसे में इसे गर्मी के मौसम में खाना चाहिए या नहीं इसे लेकर कई लोगों के मन में यह सवाल जरूर आता है कि क्या गर्मियों में इसे खाना सही है या फिर इससे सेहत को नुकसान पहुंच सकता है. क्योंकि इस समय ठंडी तासीर वाले फल खाने चाहिए, जिससे शरीर को ठंडक मिले. ऐसे में क्या गर्मी में पपीता खाना चाहिए या नहीं३ आइए जानते हैं इसके बारे में एक्सपर्ट से

क्या कहते हैं एक्सपर्ट?

मेरठ की डाइटिशियन आयशा परवीन ने बताया कि पपीते की तासीर हल्की गर्म मानी जाती है, लेकिन यह शरीर को ठंडक पहुंचने वाला भी फल है, खासकर जब इसे पका हुआ खाया जाए. गर्मियों में पपीता खाना सेहत के लिए फायदेमंद होता है क्योंकि इसमें पानी की मात्रा ज्यादा होती है, जिससे शरीर को हाइड्रेट रखने और लू से बचाव करने में मदद मिलती है. पीता पाचन क्रिया के लिए फायदेमंद होता है. इससे कब्ज की समस्या को दूर करने और इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाने में मदद मिलती है. पपीते में मौजूद एंजाइम्स पेट को साफ रखने में मदद करते हैं. इसके साथ ही ये स्किन को ग्लोइंग बनाने में भी मददगार होता है. पपीता वजन कम करने वाले लोगों के लिए भी एक अच्छा विकल्प है क्योंकि इसमें कैलोरी कम और फाइबर ज्यादा मात्रा में होता है.

किन लोगों को नहीं खाना चाहिए पपीता?

एक्सपर्ट का कहना है कि पपीता की तासीर गर्म होती है जिसकी वजह से कुछ लोगों को इसे ज्यादा मात्रा में खाने से एसिडिटी और गैस की समस्या हो सकती है. खासकर गर्भवती महिलाओं को पपीता खाने से पहले डॉक्टर की सलाह लेनी चाहिए. गर्मी में पपीते के साथ छाछ, दही और खीरा जैसी ठंडी चीजें खाना सही रहता है. ऐसा करने से शरीर में गर्मी असर होगा और बैलेंस बना रहेगा.

सुबह खाली पेट पपीता खाना फायदेमंद होता है, लेकिन जिन लोगों को इससे एलर्जी या इसे खाने से पेट में जलन हो तो तुरंत इसका सेवन बंद कर देना चाहिए. जिन लोगों को एसिडिटी या पेट में जलन रहती है, उन्हें खाली पेट पपीता नहीं खाना चाहिए. पपीता गर्मी में खाना सही है लेकिन इसे सीमित मात्रा और सही तरीके से ही खाना चाहिए.

गर्मी में सुबह चेहरे पर लगाएं ये चीजें, दिनभर स्किन रहेगी फ्रेश

एजेंसी

गर्मी में अपनी स्किन का ख्याल रखना बहुत जरूरी है. क्योंकि इस समय तेज धूप, पसीना और उमस भरी गर्मी के कारण स्किन से जुड़ी कई तरह की समस्या हो सकती हैं. इनमें जलन और रेडनेस जैसी समस्या हो सकती है. इसके अलावा गर्मी और पसीना चेहरे के कारण चेहरा डल नजर आने लगता है.

ऐसे में आपको सही स्किन केयर रूटीन फॉलो करना बहुत जरूरी है. तेज गर्मी में आप घर पर मौजूद कुछ चीजों को चेहरे पर लगा सकते हैं. जिससे आपका चेहरे को ठंडक मिले आपकी स्किन सॉफ्ट रहे. आइए जानते हैं उन नेचुरल चीजों के बारे में जो आप सुबह स्किन पर लगा सकते हैं.

आप रोज वॉटर का टोनर की तरह इस्तेमाल कर सकते हैं. फेस वॉश के कॉटन की मदद से रोज वाटर चेहरे पर लगाएं. इससे स्किन को हाइड्रेट और पोर्स को टाइट करने में मदद करता है.

से नेचुरल टोनर भी कहा जा सकता है,जो स्किन को ताजगी प्रदान करता है और गर्मी के कारण स्किन पर होने वाली जलन को भी कम कर सकता है.

सुबह फेस वॉश करने के बाद आप एलोवेरा जेल चेहरे पर लगा सकते हैं. इस स्किन के लिए ठंडक पहुंचाने के साथ ही सॉफ्ट और ग्लोइंग बनाए रखने में मदद करता है. अगर आपकी स्किन ऑयली है, तो एलोवेरा जेल एक आपके लिए लाइट मॉइश्चराइजर की तरह काम करेगा और आपकी स्किन चिपचिपी नहीं लगेगी.

भारत में सऊदी के अगले दिन तो इंडोनेशिया में 3 दिन बाद शुरू होता है रमजान, जानिए बाकी देशों का हाल

एजेंसी

रमजान का चांद सबसे पहले कहां दिखता है? इसका जवाब सऊदी अरब है और रोजा रखने वाले अधिकांश मुसलमान इसे जानते भी हैं, लेकिन क्या आप जानते हैं कि पूरी दुनिया में रमजान के विधिवत शुरू होने में कम से कम 3 दिन का समय लग जाता है. उदाहरण के लिए सऊदी अरब में अगर 28 फरवरी की शाम को रमजान का चांद दिखता है तो भारत में उसके अगले दिन से इसे मनाने की घोषणा की जाती है.

इसी तरह इंडोनेशिया में सऊदी के 3 दिन बाद विधिवत रूप से रमजान की घोषणा की जाती है. दरअसल, यह चांद के निकलने और संबंधित देश में दिखने की वजह से यह होता है.

रमजान की घोषणा कैसे होती है?

रमजान इस्लामी पंचांग का नौवां महीना है और इस्लाम में इसे सबसे पवित्र महीना माना जाता है. इस्लाम का पूरा चक्र सूर्य की वजाय चंद्रमा के गति पर निर्भर करता है. यही वजह है कि रमजान की घोषणा चांद देखने के बाद ही किया जाता है.

इस्लामिक कैलेंडर में एक महीना करीब 29 दिनों का होता है और एक साल करीब 355 दिनों का. यह ग्रेगोरियन के कैलेंडर से काफी अलग है, जहां 365 दिनों का एक साल होता है. इस्लामिक कैलेंडर में फेरबदल की वजह से रमजान का महीना हर बार अलग-अलग समय पर पड़ता है.

रमजान की घोषणा मुख्यतरू तीन बातों पर निर्भर करती है. इन्हीं तीन बातों की वजह से रमजान की घोषणा किसी देश में पहले तो किसी देश में बाद में की जाती है.

1. रमजान का चांद स्थानीय स्तर पर देखा जाता है. सभी देश के लोग कमेटी के जरिए इस चांद को देखते हैं. रमजान के चांद को अर्द्धचंद्र कहा जाता है. यानी अमावस्या के बाद जब चांद पूर्णिमा की तरफ बढ़े. यह चांद सूर्य के ढलने के तुरंत ही बाद दिखता है. कई बार मिस हो जाता है. चांद नहीं दिखने की स्थिति में रमजान महीने की घोषणा नहीं की जाती है.

2. इस्लाम मुख्यतरू दो भागों में विभाजित है. एक शिया और दूसरा सुन्नी. शिया और सुन्नी बहुल देश अपने-अपने हिसाब से चांद देखकर रमजान महीने की घोषणा करता है. दोनों ही समुदाय के जिम्मेदार लोग चांद को देखने के लिए काफी मेहनत करते हैं.

3. रमजान का रोजा कब से शुरू होगा, यह परिवारिक नेटवर्क पर भी निर्भर है. सीएनएन से बात करते हुए दक्षिण एशियाई अध्ययन विभाग के प्रोफेसर स्कॉट कुगले कहते हैं- उत्तरी अमेरिका में रहने वाले लोग जिनके परिवार भारत या पाकिस्तान में रहते हैं. वे उत्तरी अमेरिका में तब रोजा रखना शुरू कर सकते हैं, जब पाकिस्तान या भारत में उनके परिवार वाले रोजा रखना शुरू कर दें.

रमजान में चांद का विज्ञान

इस तारीख को आसमान में दिखेंगे सातों ग्रह, 2040 से पहले आखिरी मौका

एजेंसी

आसमान की गहराइयों में छिपे रहस्यों को देखने का रोमांच ही अलग होता है. लेकिन इस हफ्ते, आसमान कुछ खास लेकर आ रहा है. अगर आप तारों और ग्रहों को निहारने के शौकीन हैं, तो यह सप्ताह आपके लिए यादगार बनने वाला है.

इस बार सात ग्रहकृमंगल, बृहस्पति, यूरेनस, शुक्र, नेपच्यून, बुध और शनिकृएकसाथ नजर आएंगे. ऐसा दुर्लभ नजारा 2040 से पहले फिर नहीं दिखेगा. 28 फरवरी को सूरज डूबने के बाद कुछ ही मिनटों के लिए, ये सातों ग्रह एक साथ चमकेंगे.

किन ग्रहों को बिना टेलीस्कोप के देख सकते हैं?

हमारे सौरमंडल के सभी ग्रह सूरज के चारों ओर एक ही समतल कक्षा में चक्कर लगाते हैं. लेकिन हर ग्रह की गति और दूरी अलग होती है. जब ये सभी ग्रह एक खास कोण पर आ जाते हैं, तो हमें ऐसा लगता है कि ये एक सीध में हैं, जिसे प्लेनेटरी परेड कहा जाता है. हालांकि असल में ये अरबों किलोमीटर दूर होते हैं.

स्ट्रेंजर थिंग्स वाली इलेवन या वेडनेसडे... दोनों में कौन है ज्यादा अमीर?

इस अद्भुत खगोलीय घटना में चार ग्रहकृबुध, शुक्र, बृहस्पति और मंगलकृआप बिना किसी दूरबीन या टेलीस्कोप के देख सकते हैं. शुक्र और बृहस्पति सबसे चमकीले रहेंगे, जिन्हें पहचानना बेहद आसान होगा. मंगल अपनी लालिमा के कारण अलग दिखेगा. शनि को देखना थोड़ा मुश्किल होगा क्योंकि यह क्षितिज के बहुत करीब होगा. यूरेनस और नेपच्यून को देखने के लिए आपको टेलीस्कोप की जरूरत पड़ेगी.

साप्ताहिक
सबका जम्मू कश्मीर

क्या है लाइट पॉल्यूशन, कैसे दुनिया की सबसे बड़ी टेलीस्कोप के लिए बना खतरा?

रोशनी से होने वाला पॉल्यूशन नया खतरा बन रहा है. इसने दुनिया की सबसे बड़ी टेलीस्कोप के लिए खतरा पैदा कर दिया है. अंतरिक्ष में नजर रखने वाले विशेषज्ञों ने इसके लिए चेतावनी भी है. ऐसे में सवाल है कि प्रकाश तो रोशनी देने का काम करता है फिर इससे प्रदूषण कैसे पैदा हो रहा है. क्या होता है लाइट पॉल्यूशन और यह कैसे खतरा पैदा कर रहा है और इसका क्या असर पड़ेगा?

, t¦h

हवा, पानी और ध्वनि के प्रदूषण के बाद अब नया खतरा बढ़ रहा है. यह है रोशनी से होने वाला प्रदूषण. जिसे लाइट पॉल्यूशन कहा गया है. लाइट पॉल्यूशन ने दुनिया की सबसे बड़ी टेलीस्कोप के लिए खतरा पैदा कर दिया है. अंतरिक्ष में नजर रखने वाले विशेषज्ञों ने इसके लिए चेतावनी भी है. उनका कहना है, हाइड्रोजन एनर्जी प्रोजेक्ट से निकलने वाला लाइट पॉल्यूशन यूरो. पियन सदर्न ऑब्जर्वेट्री की वेरी लार्ज टेलीस्कोप के लिए मुश्किल बढ़ा रहा है.

ऐसे में सवाल है कि प्रकाश तो रोशनी देने का काम करता है फिर इससे प्रदूषण कैसे पैदा हो रहा है. क्या होता है लाइट पॉल्यूशन और यह कैसे खतरा पैदा कर रहा है और इसका क्या असर पड़ेगा?

क्या है लाइट पॉल्यूशन?

धरती पर बढ़ती आर्टिफिशियल लाइट ही इसकी वजह है. यह इतनी ज्यादा बढ़ रही है कि रात में आकाश से तारों और सौरमंडल की घटनाओं को देखना मुश्किल हो रहा है. विशेषज्ञों का कहना है कि लाइट पॉल्यूशन के वेरी लार्ज टेलीस्कोप की क्षमता 30 फीसदी घट सकती है.

टेलीस्कोप की क्षमता का घटना खगोलशास्त्रियों के लिए मुसीबतें पैदा कर सकता है. उनके लिए सौर मंडल की घटनाओं को देखना और उसे समझना मुश्किल हो सकता है क्योंकि टेलीस्कोप के कारण अंतरिक्ष में दिखने वाले बदलाव और उसके असर की भविष्यवाणी करना आसान हो पाता है.

कितनी मुश्किल बढ़ा सकता है यह प्रदूषण?

टेलीस्कोप के लिए मुश्किल और भी ज्यादा बढ़ने की वजह है उसकी लोकेशन. यूरोपियन सदर्न ऑब्जर्वेट्री की वेरी लार्ज टेलीस्कोप दक्षिण अमेरिका के देश चिली में स्थापित है. टेलीस्कोप चिली के अटाकामा रेगिस्तान में है ताकि रात में आकाशीय घटनाओं को आसानी से देखा और समझा जा सके.

अमेरिकी कंपनी एईएस एनर्जी चिली में एक बड़ा नवीकरणीय हाइड्रोजन संयंत्र बनाने की योजना बना रही है. यह उस जगह से कुछ किलोमीटर की दूरी पर होगा, जहां वेधशाला स्थित है. इय परियोजना से होने वाला प्रकाश प्रदूषण वेधशाला और वीएलटी दूरबीन के संचालन के लिए अधिक जोखिम पैदा करता है. यह प्रोजेक्ट 3,021 हेक्टेयर में फैला है. यहां के औद्योगिक पार्क है, जिसमें तीन सौर फार्म, तीन पवन फार्म, एक बैटरी भंडारण प्रणाली और हाइड्रोजन उत्पादन की सुविधाएं होंगी.

यूरोपियन सदर्न ऑब्जर्वेट्री का अनुमान है कि इस परियोजना से लगभग 20,000 लोगों वाले शहर के बराबर प्रकाश प्रदूषण पैदा होगा. पार्क के कुछ हिस्से यूरोपियन सदर्न ऑब्जर्वेट्री की दूरबीनों से 5 किलोमीटर की दूरी पर हो सकते हैं, और भविष्य में कोई भी विस्तार रात के आकाश के लिए प्रकाश प्रदूषण को और भी बदतर बना सकता है.

अगर ऐसा होता है तो दूरबीन को अपनी क्षमता बढ़ाने के लिए और भी बेहतर तकनीक की जरूरत होगी ताकि यह अपना कार्य ठीक तरीके से कर सके. इसमें और भी ज्यादा निवेश करना होगा. अंतरिक्ष की जानकारी जुटाना वैज्ञानिकों के लिए और महंगा हो जाएगा.

हाइटेक टेलीस्कोप

वेरी लार्ज टेलीस्कोप दुनिया के सबसे हाइटेक टेलीस्कोप है. इसे 1990 के दशक में 350 मिलियन डॉलर से बनाया गया था. इसमें चार 27–फुट चौड़ी दूरबीनें हैं जो दूर की वस्तुओं का निरीक्षण करने और ब्रह्मांड के रहस्यों को उजागर करने के लिए एक साथ काम करती हैं. हालांकि, अगर हाइड्रोजन परियोजना का निर्माण हो जाता है, तो यह दूरबीन की क्षमता को कम करेगा.

ईएसओ के महानिदेशक जेवियर बार्कोन्स का कहना है, इस परियोजना से आकाश की चमक 10ः तक बढ़ जाएगी. वेधशाला सबसे धुंधली आकाशगंगाओं में से लगभग 30 प्रतिशत को देखने की क्षमता खो सकती है.

हम अभी ग्रहों के वायुमंडल का अध्ययन करना शुरू कर रहे हैं, लेकिन अगर आक. ाश अधिक चमकीला हो जाता है, तो हम उन दृश्यों को देखने का मौका खो सकते हैं.

बिन चुहिया दो नर चूहों ने पैदा किया बच्चा... चीनी वैज्ञानिकों ने दुनिया को चौंकाया

एजेंसी

सोचिए, अगर किसी बच्चे के जन्म के लिए माँ की जरूरत ही न हो! यह सुनने में किसी साइंस फिक्शन मूवी का सीन लग सकता है, लेकिन चीन के वैज्ञानिकों ने इसे सच कर दिखाया है.

उन्होंने दो मेल (नर) चूहों से संतान पैदा करने का अनोखा कारनामा कर दिखायाकृवो भी बिना किसी माँ की भूमिका के.

यह खोज विज्ञान और जेनेटिक इंजीनियरिंग के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी कदम मानी जा रही है, जो भविष्य में इंसानों के लिए भी नई संभावनाओं के दरवाजे खोल सकती है. लेकिन सवाल उठता है कि यह मुमकिन कैसे हुआ? और क्या यह तकनीक कभी इंसानों के लिए भी इस्तेमाल हो पाएगी? आइए जानते हैं इस हैरतअंगेज वैज्ञानिक उपलब्धि के बारे में विस्तार से.

कैसे हुआ यह वैज्ञानिक चमत्कार?

सामान्यतरू किसी भी स्तनधारी जीव के जन्म के लिए माँ और पिता दोनों की जरूरत होती है. इसकी वजह होती है "जीनोमिक इम्प्रिंटिंग" नामक जैविक प्रक्रिया, जो यह तय करती है कि कुछ जीन केवल माँ से और कुछ केवल पिता से मिलें, तभी भ्रूण सही तरीके से विकसित हो सकता है. अगर दोनों

जीन एक ही लिंग (जैसे दो पुरुष या दो महिलाएं) से आते हैं, तो भ्रूण का विकास बाधित हो जाता है. यही कारण है कि नेचुरली एक ही लिंग के जोड़े से बच्चें का जन्म असंभव माना जाता है. लेकिन चीन की "चाइनीज एकेडमी ऑफ साइंसेस" के वैज्ञानिकों ने इस जैविक नियम को चुनौती दे दी.

क्या किया वैज्ञानिकों ने?

वैज्ञानिकों ने इस प्रयोग के लिए दो नर चूहों का चयन किया और इस पूरी प्रक्रिया को लैब में अंजाम दिया. सबसे पहले, वैज्ञानिकों ने एक नर चूहे से स्पर्म (शुक्राणु) लिया. उसके बाददूसरे नर चूहे से भ्रूणीय स्टेम सेल लिया गया. इस स्टेम सेल में जेनेटिक बदलाव किए गए, ताकि भ्रूण बनने में कोई बाधा न आए. इस मिश्रण को एक डोनेट किए गए अंडाणु में डाला गया, जिसकी खुद की क्छ। पहले ही हटा दी गई थी. आखिर में भ्रूण को विकसित करने के लिए 20 जीन में बदलाव किए गए, जिससे प्राकृतिक रूप से उत्पन्न होने वाली रुकावटें को दूर किया जा सके.

क्या रहे नतीजे?

यह प्रयोग किसी चमत्कार से कम नहीं है, लेकिन पूरी तरह सफल भी नहीं कहा जा सकता. वैज्ञानिकों ने 1,000 से अधिक भ्रूण बनाए, लेकिन उनमें से केवल 134 ही जीवित जन्म ले सके. यह सफलता दर बेहद कम मानी जाती है. जन्मे चूहों में कई समस्याएं देखी गईं. जैसे कुछ चूहे बेहद कमजोर थे. कुछ के चेहरे की बनावट सही नहीं थी तो कुछ चूहे दूध नहीं पी पा रहे थे. जो थोड़े स्वस्थ चूहे थे, वे भी आगे संतान पैदा करने में असमर्थ थे.

क्या इंसानों के लिए भी यह संभव होगा?

हालाँकि, यह वैज्ञानिक खोज रोमांचक है, लेकिन इसे इंसानों पर लागू करने में अभी काफी समय लगेगा. वैज्ञानिकों का मानना है कि भविष्य में यह तकनीक समलैंगिक जोड़ों को जैविक संतान पैदा करने में मदद कर सकती हैय इसके अलावा, यह विलुप्त हो रही प्रजातियों के संरक्षण में भी अहम भूमिका निभा सकती है.

लेकिन अभी इसमें कई तकनीकी और नैतिक चुनौतियाँ बनी हुई हैं.

क्या भविष्य में माँ के बिना भी होगा जन्म?

यह सोचने में जितना असंभव लगता है, उतना ही रोमांचक भी है. फिलहाल यह प्रयोग सिर्फ एक वैज्ञानिक उपलब्धि तक सीमित है, लेकिन विज्ञान की दुनिया में कुछ भी नामुमकिन नहीं. हो सकता है कि आने वाले दशकों में यह तकनीक इतनी उन्नत हो जाए कि इंसानों के लिए भी यह संभव हो जाए.

धरती ही नहीं, इस प्लैनेट पर भी है जीवन, भारतीय वैज्ञानिक का बड़ा दावा

एजेंसी

सदियों से इंसान इस सवाल से जूझता आया है. क्या हम इस ब्रह्मांड में अकेले हैं? अब इस रहस्य पर से पर्दा उठता नजर आ रहा है. वैज्ञानिकों को पृथ्वी से सात सौ ट्रिलियन मील दूर स्थित एक ग्रह के2 –18बी नाम के प्लैनट से ऐसे संकेत मिले हैं, जो जीवन की संभावनाओं की ओर इशारा करते हैं. यह ग्रह पृथ्वी से ढाई गुना बड़ा है और इसके वातावरण की जांच कैम्ब्रिज विश्व. विद्यालय के वैज्ञानिकों की टीम कर रही है.

के2 –18बी के वायुमंडल में वैज्ञानिकों को डाइमिथाइल सल्फाइड और डाइमिथाइल डाइसल्फाइड जैसे केमिकल एलिमेंट्स मिले हैं, जो आमतौर पर पृथ्वी पर केवल जीवित जीवा. ं, जैसे फाइटोप्लांकटन और बैक्टीरिया, द्वारा उत्पन्न किए जाते हैं. हालांकि अभी इन संकेतों को अंतिम प्रमाण नहीं माना जा सकता, लेकिन प्रमुख रिसर्चर प्रोफेसर निक्कू मधुसूदन का मानना है कि अगले एक या दो सालों में यह साबित किया जा सकेगा कि के2 –18बी पर जीवन की मौजूदगी संभव है.

इस ग्रह के वायुमंडल में अमो. निया की अनुपस्थिति ने भी वैज्ञानिकों का ध्यान खींचा है. वैज्ञानिक मानते हैं कि के2 –18बी पर एक विशाल महासागर हो सकता है, जो अमोनिया को सोख रहा है. अमोनिया का पाया जाना आमतौर पर जीवन के लिए अहम संकेत होता है, इसलिए इसकी कमी से यह संभावना और मजबूत होती है कि ग्रह पर समुद्र जैसी जीवनदायी संरचना हो सकती है. हालांकि, यह भी संभव है कि सतह के नीचे लावा का महासागर हो, जो जीवन के लिए प्रतिकूल होगा.

अभी और सटीक जानकारी जुटाने की कोशिश

वैज्ञानिकों को के2 –18बी के वायुमंडल से अब तक 'तीन–सिग्मा' स्तर की पुष्टि मिली है. 'सिग्मा' वैज्ञानिक सटीकता को मापने का मानक है. आमतौर पर किसी खोज को पुख्ता कहने के लिए 'पांच–सिग्मा' की आवश्यकता होती है. हालांकि तीन–सिग्मा स्तर पर मिले संकेत इस दिशा में एक बड़ा कदम हैं, लेकिन वैज्ञानिक समुदाय को पूर्ण रूप से आश्वस्त करने के लिए अभी और सटीकता की दरकार है.

प्रोफेसर निक्कू मधुसूदन का कहना है कि अगर के2 –18बी पर जीवन पाया जाता है, तो यह केवल एक ग्रह की कहानी नहीं होगी, बल्कि इससे पूरे ब्रह्मांड में जीवन की व्यापक संभावनाएं उजागर हो जाएंगी.

साप्ताहिक सबका जम्मू कश्मीर

संपादकीय

ग़ाज़ा की भूख

युद्ध की सबसे भयावह छवि अक्सर उसकी हिंसा नहीं, बल्कि उसकी खामोशी होती है – किसी बच्चे की खोखली आँखों का सन्नाटा, किसी माँ का फैला हुआ हाथ, या खाने से लदा एक ट्रक जो कभी पहुँचता ही नहीं। गाजा आज सिर्फ़ एक युद्ध क्षेत्र नहीं है। यह मानवीय पतन का वह दौर है जहाँ पीड़ा को नकारना, पीड़ा जितनी ही बहरी है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की यह टिप्पणी कि गाजा में बच्चे ष्असली भुखमरीष झेल रहे हैं, महीनों की टालमटोल भरी राजनीतिक भाषा में चुभ गई। हालाँकि उनके शब्दों में सूक्ष्मता कम ही देखी जाती है, लेकिन उनमें एक कच्चापन है जो गूंजता है। इस मामले में, वह कच्चापन एक असहज सच्चाई को प्रतिबिंबित करने वाले दर्पण का काम करता हैरू लोग भूख से मर रहे हैं, प्रत्यक्ष और निर्विवाद रूप से। और यह सच्चाई अब संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्टों या मानवाधिकार बुलेटिनों तक ही सीमित नहीं है – यह धुंधली तस्वीरों में, खाली कटोरों में, लूटे गए खाने के ट्रकों में दिखाई देती है। इसे और भी परेशान करने वाली बात यह है कि इस संकट को बयानबाजी के ज़रिए छुपाने की कोशिश की जा रही है। गाजा में भुखमरी से इजरायली सरकार का स्पष्ट इनकार और यह आरोप कि ये दावे ष्सरासर झूठष हैं, वैश्विक धारणा को आकार देने के एक जानबूझकर किए गए प्रयास का संकेत देते हैं, जबकि मानवीय एजेंसियां निर्बाध पहुँच की भीख मांगती रहती हैं। जब सहायता ट्रकों को उग्रवादियों द्वारा नहीं, बल्कि आम नागरिकों द्वारा लूटा जाता है – हताश, दुर्बल और भूखे – तो यह रसद या विद्रोह का सवाल नहीं रह जाता। यह एक नैतिक आपातकाल बन जाता है। इजरायल का यह तर्क कि वह सहायता को सक्षम बना रहा है, और यह कि कोई भी कमी हमास के हस्तक्षेप के कारण है, आधु. निक संघर्षों में एक आम रणनीति को दर्शाता हैरू द्वारों को नियंत्रित करते हुए दोष दूसरे पक्ष पर मढ़ना। अगर हमास की ओर से दुर्भावना मान भी ली जाए, तो भी यह सामूहिक दंड को रोकने के अपने कर्तव्य से कब्ज़ाकारी शक्ति को मुक्त नहीं करता। भुखमरी केवल युद्ध का एक दुष्परिणाम नहीं है; यह एक हथियार बन जाती है जब भोजन की पहुँच में हेराफेरी की जाती है, उसे बाधित किया जाता है या धीमा किया जाता है। संयुक्त राष्ट्र के अधिकारियों ने, असंभव बाधाओं का सामना करते हुए, स्वीकार किया है कि वे अपेक्षित पैमाने पर आपूर्ति नहीं कर सकते। आटे से लदे उनके ट्रकों को वितरण केंद्रों तक पहुँचने से पहले ही हताश हाथों ने रोक लिया है। उनके ड्राइवरों को वास्तविक खतरों का सामना करना पड़ रहा है। नौकरशाही और गोलियों ने उनकी पहुँच को अवरुद्ध कर दिया है। ये कोई छिटपुट चूक नहीं हैं ये उस व्यवस्था के लक्षण हैं जहाँ भूख को पनपने दिया गया है जबकि दुनिया शब्दाडंबरों को प्राथमिकता दे रही है। सैन्य कार्रवाई में रुकावटें समाधान नहीं हैं। ये साँस लेने के लिए जगह हैं जो अक्सर पुनर्जीवित नहीं हो पातीं। गाजा को किसी रुकावट की नहीं, बल्कि एक योजना की ज़रूरत है सैन्य और राजनीतिक तोड़फोड़, दोनों से सुरक्षित सहायता पहुँचाने के लिए एक सतत, सत्यापन योग्य तंत्र की। और उससे भी बढ़कर, इसमें शामिल सभी पक्षों की ओर से एक ईमानदार आकलन की आवश्यकता है। आप आँकड़ों पर विवाद कर सकते हैं। आप नीतियों पर बहस कर सकते हैं। लेकिन आप एक भूखे बच्चे की धँसी हुई आँखों में देखकर उसे झूठ नहीं कह सकते। गाजा भूख से मर रहा है। और दुनिया के पास बहाने खत्म होते जा रहे हैं।

रामजी लाल सुमन के बिगड़ैल बयानों से योगी और अखिलेश दोनों की सियासी मुश्किलें बढ़ेंगी!

कमलेश पांडे

समाजवादी पार्टी के राज्यसभा सांसद और दलित नेता रामजी लाल सुमन ने मेवाड़ के प्रतापी राजपूत शासक राणा सांगा को गद्दार बताते हुए जो विवादस्पद बयान दिया है, और क्षत्रियों की अखिल भारतीय 'करणी सेना' ने जिस तरह से उसे जातीय नायकों के अपमान का विषय ठहराते हुए सुमन के घर पर धावा बोल दिया था, उस पर जारी प्रशासनिक और सियासी खानापूर्ति से यदि भारत गृहयुद्ध की आग में झुलस जाए तो किसी को हैरत नहीं होना चाहिए। क्योंकि यह सबकुछ पहले अमेरिकी–पाकिस्तानी एजेंडे और अब चीनी–बंगलादेशी एजेंडे के अनुरूप हो रहा है, जिसे भारत के कथित सेक्यूलर दलों के पृष्ठ पोषक अरब देशों का समर्थन प्राप्त है।

समझा जाता है कि जब–जब भारत अपनी सही रणनीति के बल पर विकास की गति को प्राप्त करता है, तब–तब हमारे विघ्न संतोषी कुछ राजनेता विदेशी ताकतों की शह पर यहाँ जातीय और सांप्रदायिक उन्माद पैदा करने की कोशिश करते रहे हैं। यह बात मैं नहीं कह रहा हूँ बल्कि यहाँ की सियासी बयानबाजियां और उससे जुड़े साक्ष्य इस बात की चुगली करते हैं। ऐसे में सुलगता हुआ सवाल है कि आखिर वोट बैंक की कुत्सित राजनीति में निर्लज्ज अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का दुरूपयोग करके कबतक शांतिप्रिय भारतीय समाज को झुलसाया जाता रहेगाद्य क्योंकि कभी बादशाहों के इशारे पर, कभी ब्रिटिश नौकरशाहों के तिकड़म पर और आज भारत के अपने ही राजनेताओं की शर्मनाक शतरंजी चालों पर एक समाज को दूसरे समाज से भिड़ाया जाता है और अपना–अपना राजनीतिक उल्लू सीधा किया जाता है।

बता दें कि भारत में वामपंथियों की राजनीति वर्गवादी झड़प के हालात पैदा करके, समाजवादियों की राजनीति जातिवादी संघर्ष के हालात पैदा करके और कांग्रेसियों–राष्ट्रवादियों की राजनीति सां. प्रदायिक दंगे के हालत पैदा करके खूब फली–फूली! लेकिन विकास के पैमाने पर भारत अपने पड़ोसी देश चीन से 1987 में आगे बढ़कर भी बाद के वर्षों में निरंतर पिछड़ता चला गया। यही वजह है कि समा. जवादी पार्टी के राज्यसभा सांसद रामजीलाल सुमन जैसे राजनेता एक बार फिर से विवादित बयान देकर लगातार सुर्खियों में बने हुए हैं। ऐसे विषैले नेताआ. ें के खिलाफ स्पष्ट कार्रवाई नहीं होने से प्रशासनिक सुचिता और न्यायिक दूरदर्शिता भी अब सवालों के घेरे में है! आप मानें या न मानें, लेकिन मौजूदा विवाद की राजनी. तिक कीमत सपा नेता अखिलेश यादव के मुकाबले भाजपा नेता और उत्तरप्रदेश के मौजूदा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को कुछ अधिक अदा करनी पड़ेगी, क्योंकि वह अभी सत्ता में हैं। जिस तरह से आगरा में उनकी मौजूदगी को लेकर अखिलेश यादव ने निशाना साधा है, वह राजपूतों के खिलाफ अन्य समाज को भड़काने की गहरी साजिश है, जिसके दृष्टिगत मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को सतर्क हो जाना चाहिए और करनी सेना की गैरकानूनी हरकतों पर यूपी में अविलंब रोक लगानी चाहिए। वहीं भाजपा को भी इस मसले को जरूरत से ज्यादा तूल देने से बचना चाहिए। क्योंकि यह सारी सुनियोजित बयानबाजी मुस्लिम शासकों के कुकृत्यों से दलित और ओबीसी हिन्दुओं का ध्यान भटकाने के लिए की जा रही है, जिसे उसे समझना होगा और इसकी मजबूत रणनीतिक काट निकालनी होगी। यदि भाजपा और योगी इस मामले को ज्यादा तूल देते हैं तो लोकसभा चुनाव 2024 की तरह अखिलेश के पीडीए यानी पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक गठजोड़ को मजबूती मिलेगी, वहीं भाजपा के डीपीए यानी दलित, पिछड़ा, अगड़ा गठजोड़ को भी सियासी धक्का लगेगा।

वहीं अखिलेश यादव को यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि जब यूपी में दलित नेत्री मायावती उनकी पार्टी के लिए मजबूत चुनौती बनी हुई थीं और मुस्लिम वोटर भी बसपा–सपा में लगभग आधा–आधा बंट गए थे तब भी राजपूत समाज उनका मजबूत वोट बैंक रहा था। उन्हें पता होना चाहिए कि यह पूरी राजपूत जाति पहले कांग्रेसियों और फिर समाजवादियों की मजबूत वोट बैंक रही है। यह बात दीगर है कि अब केन्द्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सबल नेतृत्व के चलते राजपूत मतदाता भी राष्ट्रवादी मिजाज के हो चले हैं। इसलिए पूरी राजपूत जाति को सपा का विरोधी बना देना उनके लिए राजनीतिक नादानी साबित हो सकती है। इससे न केवल बसपा और कांग्रेस को सिर उठाने का मौका मिलेगा, बल्कि सवर्णों में भी उनका इमेज उनके पिता स्व. मुलायम सिंह यादव से ज्यादा खराब हो जाएगा।

ऐसा इसलिए कि हाल में ही सपा सांसद रामजीलाल सुमन ने बौद्ध मठों के अवशेषों पर मन्दिरों के बने होने और उसे मुद्दा बनाने के जो खतरनाक संकेत दिए हैं, उससे साफ है कि वे अरब देशों और चीनी एजेंडे को देश में लागू करके सवर्ण हिन्दुओं को दलित हिन्दुओं और ओबीसी हिन्दुओं से भिड़ाने की योजना बना रहे हैं, ताकि हिन्दूदृमुस्लिम दंगे की जगह जातीय दंगे शुरू हों और समाजवादियों के राजनीतिक आधार पर कोई आंच नहीं आए। भारतीय प्रशासन और न्यायपालिका को सिरफिरे नेताओं के इस खतरनाक इरादे से देश को बचाना होगा, अन्यथा महाभारत तय है। कहना न होगा कि ये वही विदेशी एजेंट लोग हैं जिन्होंने 1977 में इंदिरा गाँधी के नेतृत्व में मजबूत हो रहे भारत की गति पर ब्रेक लगवाई थी। तब मोरारजी देसाई पर अमेरिकी सीआईए एजेंट होने के आरोप लगे थे जो बाद में देश के प्रधानमंत्री तक बने। भले ही सरकार चलाने में विफल रहे और बदले गए। फिर इन्हीं जैसे नेता लोगों ने 1989 में राजीव गाँधी के नेतृत्व में मजबूत हो रहे भारत की गति पर ब्रेक लगवाईद्य और अब 2029 में नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में मजबूत हो रहे भारत की गति में ब्रेक लगवाने के लिए गृह युद्ध के हालात पैदा करने जैसी विषाक्त बयानबाजी कर रहे हैं। बता दें कि सपा सांसद रामजी लाल सुमन ने दो टूक कहा है कि गड़े मुर्दे मत उखाड़ो, बरना भारी पड़ेगा। अगर तुम ये कहोगे कि हर मस्जिद के नीचे मंदिर है तो फिर हमें भी यह कहना पड़ेगा कि हर मंदिर के नीचे बौद्ध मठ है। और जो लोग बाबा साहब को मानने वाले लोग हैं वो यदि मोहल्ले में जाकर ये प्रचार करना शुरू कर दें तो ये मामला बड़ा ही खतरनाक मामला बन सकता है। वहीं आगरा में एक सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने करणी सेना को चेतावनी देते हुए कहा कि आगामी 19 अप्रैल को पार्टी अध्यक्ष अखिलेश यादव आगरा आ रहे हैं, जिसके बाद लड़ाई का मैदान तैयार होगा और दो–दो हाथ होंगे। एक तरफ 10 प्रतिशत लोग हैं और दूसरी तरफ 90 प्रतिशत सामाजिक न्याय की शक्तियां हैं, इसलिए विजय हमारी होगीद्य इस लड़ाई को कोई माई का लाल नहीं हरा सकता।

उन्होंने करणी सेना को फर्जी सेना कहा और पूछा कि अगर मुसलमान में बाबर का डीएनए है तो तुम्हारे अंदर किसका डीएनए है ये भी बता दो। उन्होंने आगे कहा कि अभी कुछ दिन पहले ही एक बैठक हुई, जिसमें तोप तलवार हथियार रहे। उन्होंने याद दिलाया कि भरतपुर के राजा रहे सूरजमल की तलवार ने अंग्रेजों के सिर काटे पर कभी किसी गरीब कमजोर पर उनकी तलवार नहीं चली। क्षत्रिय का तो धर्म होता है कि कमजोर की रक्षा करना है और गरीब की मदद करना है।

वहीं वह आगे बोलते नजर आए कि हमने तो तीन सेना सुनी है– थल सेना, वायु सेना और जल सेना, लेकिन ये चौथी सेना कहां से पैदा हो गई है? करणी सेना के लिए सांसद ने कहा कि हमारी हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि चीन ने हमारी जमीन पर कब्जा कर लिया है। अरुणाचल प्रदेश को चीन अपने हिस्से में दिखाता है। ये जो करणी सेना के रणबांकुरे हैं वो हिंदुस्तान की सरहद पर चले जाओ और चीन से हमको बचाओद्य वरना दुनिया में तुमसे ज्यादा नकली कोई और हो नहीं सकता।

वहीं सपा सांसद रामजीलाल सुमन ने करनी सेना वालों को ललकारते हुए कहा कि ष्ये लड़ाई हम लोगों की लड़ाई नहीं है, बल्कि ये लड़ाई लंबी है। ये लड़ाई उन लोगों से है जिन लोगों ने अखिलेश यादव के मुख्यमंत्री न रहने पर मुख्यमंत्री आवास को गंगाजल से धुलवाया था। ये लड़ाई उन लोगों से है जिन्होंने राजस्थान की विधानसभा में दलित नेता प्रतिपक्ष के मंदिर में चले जाने से मंदिर को गंगाजल से धुलवाया था। सुमन जी ने कहा कि, ष्हम कहते है कि हिंदुस्तान का मुसलमान बाबर को अपना आदर्श नहीं मानता है, वो मोहम्मद साहब को अपना आदर्श मानता है। हम कहना चाहते हैं कि जब–जब इस देश की इज्जत दांव पर लगी है, हिंदुस्तान के मुसलमान ने साबित किया है कि इस देश की मिट्टी से जितनी मोहब्बत हिन्दू को उतनी मोहब्बत मुसलमान को भी है। उन्होंने सवाल उठाया कि देश में वक्फ को लेकर कानून बनाया गया, जब किसी धर्म महजब की कमेटी बनती है तो उस कमेटी में उसी धर्म के लोग रहते हैं? वक्फ में तीन सनातनी रहेंगे, भाई क्यों रहेंगे और बौद्ध मठ का मामला चल रहा है?

साप्ताहिक
सबका जम्मू कश्मीर

ऐतिहासिक बजुह बचाओ अभियान : नगर समिति को दूसरों को नसीहत देना पड़ा भारी, खुद ही बन गई फजीहत का कारण

वजू नदी में कचरा फेंकने पर भड़के स्थानीय लोग, बोले - नदी हमारी पहचान है, इसे बर्बाद नहीं होने देंगे

राज कुमार

नगरी : एक ओर जहां केंद्र सरकार स्वच्छ भारत मिशन के तहत देशभर में सफाई व्यवस्था को सुदृढ़ करने के प्रयास कर रही है, वहीं नगरी कस्बे की म्युनिसिपल कमेटी उसी मिशन की खुलेआम अवहेलना कर रही है। कस्बे के मध्य स्थित ऐतिहासिक और धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण वजू (बजुह) नदी इन दिनों नगर समिति की लापरवाही का शिकार बन चुकी है।

स्थानीय लोगों का आरोप है कि म्युनिसिपल कमेटी प्रतिदिन नगर का कचरा उठाकर इसी पवित्र नदी में फेंक रही है। विडंबना यह है कि जो समिति आमजन को अपने घर और मोहल्लों को साफ–सुथरा रखने की नसीहत देती है, वही खुद नियमों को ताक पर रखकर नदी को गंदगी से पाट रही है।

सात हफ्तों से लगातार अपील, फिर भी प्रशासन मौन

स्थानीय नागरिक बीते सात हफ्तों से इस मुद्दे को लेकर नगर समिति और जिला प्रशासन से गुहार लगा रहे हैं, लेकिन अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है। इससे लोगों में गहरा रोष व्याप्त है। नदी के किनारे रहने वाले बुजुर्गों, युवाओं, महिलाओं ने अब "बजुह बचाओ अभियान" शुरू कर दिया है।

क्या बोले स्थानीय लोग :

नगर समिति को जनता को सफाई का पाठ पढ़ाने से पहले खुद पर अमल करना चाहिए।ेु

हमारी नदी हमारी पहचान है, इसे बर्बाद नहीं होने देंगे।ेु

प्रशासन इस ओर ध्यान नहीं देगा तो हम आंदोलन करने को मजबूर होंगे।ेु

वार्ड नंबर 2 के लोगों का फूटा गुस्सा

वार्ड नंबर 2 के निवासी सोहन लाल, बलवीर राज और मान सिंह ने म्युनिसिपल कमेटी पर गंभीर आरा.ेप लगाते हुए कहा कि, "नगर समिति लगातार वजू नदी को गंदा कर रही है और इसका सबसे अधिक असर हमारे वार्ड पर पड़ रहा है। कचरे के कारण बदबू फैल रही है और बीमारियां बढ़ रही हैं। कमेटी वार्ड नंबर 2 में बीमारियां फैलाने का काम कर रही है, जो बेहद निंदनीय है।"

बजुह नदी की पुकार - स्वच्छता नहीं तो संघर्ष तय!

बजुह नदी के किनारे फैली गंदगी | 'बजुह बचाओ अभियान' के समर्थन में प्रतिक्रिया देते नगरवासी

ऐतिहासिक बजुह नदी बचाओ अभियान को लेकर जनता में बढ़ रहा आक्रोश, प्रशासन की दोहरी नीति पर उठे सवाल

बजुह नदी पर संकट गहराया, सफाई की मांग को लेकर भड़का जनआक्रोश

कस्बे में प्रवेश करते समय दिखती है ऐसी तस्वीर जल स्रोत भी हो रहा है खत्म | स्थानीय म्यूनिसिपल कमेटी की मेहरबानी से बजुह नदी में फैली गंदगी | स्थानीय युवा अपनी राय देते

नगरी की सांस्कृतिक पहचान बजुह नदी बनी गंदगी का शिकार, प्रशासन से कड़ी कार्रवाई की मांग

बजुह नदी बचाओ आंदोलन को मिल रहा जनसमर्थन, युवाओं ने उठाई स्वच्छता की मांग

ऐतिहासिक बजुह नदी बचाओ अभियान को लेकर जनता में बढ़ रहा आक्रोश, प्रशासन की दोहरी नीति पर उठे सवाल

इस मौके पर बोले प्रवीण शर्मा उर्फ टीनू

बाजार निवासी और बजुह बचाओ अभियान से जुड़े प्रवीण शर्मा उर्फ टीनू ने कहा, "यह सिर्फ पर्यावरण नहीं, हमारी संस्कृति की लड़ाई है। वजू नदी सिर्फ एक जलधारा नहीं, हमारी भावनाओं से जुड़ी हुई पहचान है। हम इसके अस्तित्व की रक्षा के लिए हर संभव प्रयास करेंगे। अगर प्रशासन ने ध्यान नहीं दिया तो जनआंदोलन शुरू किया जाएगा।"

प्रशासन से तत्काल कार्रवाई की मांग

प्रदूषण और लापरवाही के इस गंभीर मामले को लेकर लोगों ने जिला प्रशासन और शहरी विकास विभाग के निदेशक से अपील की है कि वे इस मामले में तत्काल संज्ञान लें, जिम्मेदार अधिकारियों पर कार्रवाई करें और नदी में कचरा फेंकना बंद कराएं। साथ ही कचरा निपटान के लिए कोई वैकल्पिक स्थान निर्धारित किया जाए ताकि नदी की स्वच्छता और गरिमा बनी रहे।

बजुह नदी को बचाने की यह लड़ाई अब केवल गंदगी के खिलाफ नहीं रही, यह एक संवेदनशील और सामूहिक जिम्मेदारी बन चुकी है।

यदि समय रहते कार्रवाई नहीं हुई तो नगरी की यह ऐतिहासिक नदी इतिहास के पन्नों में सिमटकर रह जाएगी।

सूनी नहीं रहेगी कोई गोद.... अब लैब में ही तैयार होगा स्पर्म और एग

एजेंसी

फर्टिलिटी यानी प्रजनन क्षमता घट रही है, दुनिया के कई देश ऐसे हैं जो इस समस्या से जूझ रहे हैं. वैज्ञानिक इस प्रॉब्लम का सॉल्यूशन ढूंढने लगे हैं. ऐसा ही एक रिसर्च चल रही है ओसाका यूनिवर्सिटी में, यहां के वैज्ञानिक प्रो. कात्सुहिको हायाशी ने दावा किया है कि जल्द ही लैब में स्पर्म (शुक्राणु) और एग (अंडाणु) बनने लगेंगे. अगले 7 साल में यह तकनीक पूरी तरह से विकसित कर ली जाएगी. इस तकनीक को इन-विट्रो गैमेटोजेनेसिस कहते हैं. हायाशी के मुता. बिक उन करोड़ों कपल्स के लिए उम्मीद की किरण की तरह है जो इनफर्टिलिटी से जूझ रहे हैं.

प्रो. हायाशी के मुताबिक वह और उनकी टीम इस तकनीक पर तेजी से काम कर रही है. वह कहते हैं कि जल्द ही ऐसी यौन कोशिका विकिसित की जाएगी जो सामान्य प्रजनन प्रक्रिया में प्रयोग की जा सके.इससे फर्टिलिटी की समस्या से जूझ रहे कपल्स तो माता-पिता बन ही सकेंगे, बल्कि समलैंगिक जोड़ों, कैंसर पीड़ितों और उम्र दराज दंपतियों को भी लाभ मिलेगा. प्रो. हायाशी के हवाले से द गार्जियन में प्रका. शित रिपोर्ट के मुताबिक लैब में स्पर्म और एग विकसित करने की रेस में कैलिफॉर्निया की स्टार्टअप कंपनी ब्दबमचजपवद ठपवेबपमदबमे भी आगे

इनफर्टिलिटी की समस्या से जूझ रहे दंपतियों की भी अब गोद भर सकेगी. यह संभव होगा प्टळ तकनीक से. इसके तहत लैब में स्पर्म और एग विकसित किए जाएंगे. ओसाका यूनिवर्सिटी के प्रो. हायाशी ने दावा किया है कि वह और उनकी इस दिशा में लगातार जुटे हुए हैं और जल्द ही यह रिसर्च पूरी कर ली जाएगी.

हैं. इसके ब्म के मुताबिक लैब में स्पर्म पैदा करने से जनसंख्या में आ रही गिरावट को रोका जा सकता है. इस स्टार्टअप को ओपनएआई के संस्थापक सैम ऑल्टमैन समेत कई दिग्गजों का समर्थन प्राप्त है.

त्वचा व रक्त कोशिकाओं से बनेंगी यौन कोशिका

रिसर्च के मुताबिक सब कुछ ठीक रहा तो जल्द ही किसी भी व्यक्ति त्वचा व रक्त कोशिकाओं से संतान को जल्द देना संभव होगा. भले ही वह व्यक्ति जैविक तौर पर कभी माता-पिता न बन सकता हो. गार्जियन से बात करते हुए ओसाना विवि के प्रोफेसर कात्सुहिको हायाशी ने कहा कि इस रिसर्च में तेजी से प्रगति हो रही है. इसी सप्ताह पेरिस में यूरोपियन सोसाइटी ऑफ ह्यूमन रिप्रोडक्शन एंड एम्ब्रियोलॉजी की वार्षिक बैठक में उन्होंने कहा था कि मुझे थोड़ा दबाव महसूस होता है, ऐसा लगता है कि मैं किसी दौड़ में भाग ले रहा हूं, लेकिन मैं वैज्ञानिक मूल्य की भावना बनाए रखने की कोशिश करता हूं.

चूहों पर सफल रहा है प्रयोग

प्रो. हायाशी ने बताया कि यह एक बहुत बड़ी रिसर्च होगी, चूहों पर प्रयोग सफल रहा है, हमने एक ऐसा चूहा बनाया है, जिसके दो पिता हैं, यानी यह तकनीक समलैंगिक जोड़ों के लिए भी वरदान हो सकती है. वह बताते हैं कि हमें सप्ताह में कम से कम एक ईमेल ऐसा आता है, जिसमें इनफर्टिलिटी के मरीज अपनी परेशानी बताते हैं. इसलिए मैं इस समस्या को समझता हूं. स्टार्टअप कंपनी कॉन्सेप्शन के सीईओ मैट क्रिसिलॉफ ने गार्जियन को बताया कि प्रयोगशाला में विकसित एग सब कुछ बदल देंगे. यह महिलाओं को अधिक उम्र में बच्चे पैदा करने की अनुमति देगा.

लैब में ऐसे बनेगा स्पर्म

ईएसएचआरई सम्मेलन में प्रो. हायाशी ने बताया कि अब तक हमें चूहों के स्पर्म को बनाने और मानव अंडकोष विकसित करने में सफलता मिल गई है.अब हम पूरी तरह आईवीजी पर काम कर रहे हैं. इसमें किसी व्यक्ति की स्किन या रक्त को. शिकाओं से स्टेम कोशिकाएं बनाई जाती हैं, फिर इन्हें जर्म कोशिकाओं में बदल दिया जाता है. ये एग और स्पर्म की शुरुआत की तरह होते हैं. इन्हें लैब में बनाई गई स्टेम कोशिकाओं में रखा जाता है. यही जर्म कोशिकाओं से एग या स्पर्म बना सकते हैं. चूहों में ये प्रयोग भी सफल हो चुका है.

अभी लगेंगे सात साल

प्रो. हायाशी ने कहा कि लैब में स्पर्म को विकसित करने में अभी सात लग सकते हैं, इसें महिलाओं की कोशिश से स्पर्म विकसित करने में चुनौती महसूस हो रही है. हालांकि उन्होंने इसे असंभव नहीं कहा. अन्य विशेषज्ञ भी हायाशी की समय सीमा से सहमत हैं. एडिनबर्ग विवि में कैंसर से पीड़ित बच्चों में पुरुष प्रजनन क्षमता के संरक्षण के लिए शोध कर रहे प्रोफेसर रॉड मिशेल ने कहा कि विज्ञान तेजी से बढ़ रहा है, हमें उम्मीद है कि हम पांच या दस साल के समय में अंडाशय और अंडकोश में लैब में बने स्पर्म और एग देख पाएंगे.

हमें साबित करना होगा कि तकनीक सुरक्षित है

मैनचेस्टर विश्वविद्यालय के एंड्रोलॉजी के प्रोफेसर और उप-उपाध्यक्ष प्रोफेसर एलन पेसी ने प्रो. हायाशी की बात पर सहमति जताई. उन्होंने कहा कि कई प्रयोगशाला में उगाए गए अंडो से शिशु चूहे पैदा किए गए हैं. हालांकि मानव एग बनाना चुनौतीपूर्ण है, लेकिन हाल ही में इस बारे में लोगों की ज्यादा समझ विक. सित हुई है कि आखिर निष्क्रिय अवस्था में मानव अंडे कैसे रहते हैं. ज्यादातर लोगों का मानना है कि अभी इस तकनीक में कई वर्ष लग सकते हैं. हालांकि अच्छी बात ये है कि प्रयोगशाला में बने चूहों का जीवनकाल अच्छा रहा है और उन्होंने भी सामान्य चूहों की तरह बच्चे पैदा किए हैं. प्रो. हायाशी ने कहा कि हमारी जिम्मेदारी ये भी है कि हम इस बात को साबित करें कि ये तकनीक सुरक्षित है. उन्होंने कहा कि बेशक मैंने दो पिताओं से एक चूहा बनाया, मगर यह प्राकृतिक नहीं है.

अंतरिक्ष में अजीबो गरीब रेडियो सिग्नल कहां से आते हैं, वैज्ञानिकों ने सुलझाया रहस्य

स्पेस साइंटिस्ट्स ने आखिरकार उन अजीबोगरीब रेडियो सिग्नल की गुत्थी सुलझा ली है, जो अब तक विज्ञान के लिए एक पहेली बने हुए थे. कहा जा रहा है कि ये खोज सितारों के जीवन के अंतिम चरणों को समझने के तरीके को पूरी तरह बदल सकती है. वैज्ञानिकों के अनुसार, यह सिग्नल हर दो घंटे में दोहराता है और इसे पहली बार एक दशक पहले खोजा गया था.

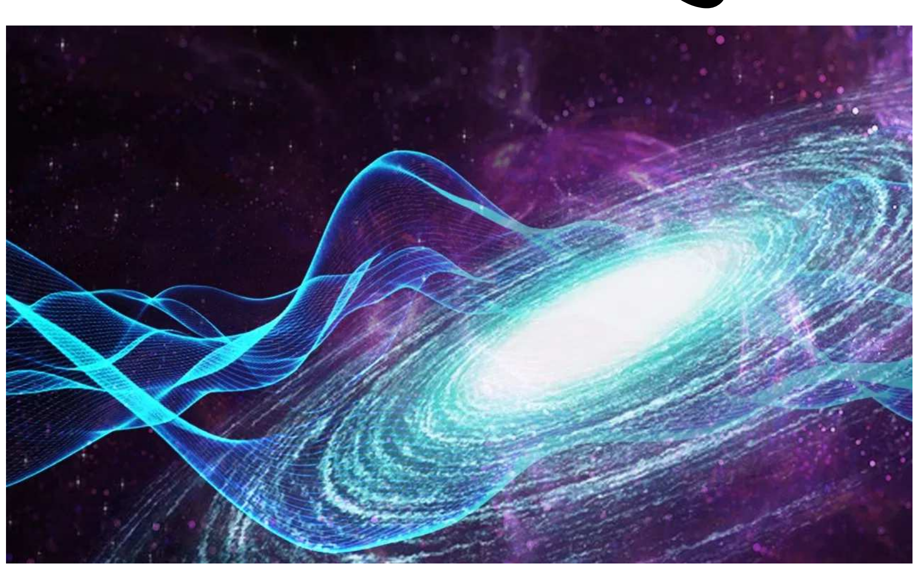

एजेंसी

अंतरिक्ष से आने वाले रहस्यमयी रेडियो सिग्नल हमेशा से वैज्ञानिकों और आम लोगों की जिज्ञासा बढ़ाते रहे हैं. पिछले साल वैज्ञानिकों ने एक ऐसा ही अजीबोगरीब सिग्नल पकड़ा था, जो हर दो घंटे में दोहराया जाता था. अब, आखिरकार इसकी गुत्थी सुलझा ली गई है.

पता चला है कि ये सिग्नल एक अनोखे बाइनरी सिस्टम से आ रहा है, जिसमें एक मरता हुआ तारा (व्हाइट ड्वार्फ) और उसका साथी एक छोटा लाल तारा (रेड ड्वार्फ) शामिल हैं. वैज्ञानिकों के मुताबिक, यह सिग्नल पहली बार करीब एक दशक पहले देखा गया था और यह हमारी आकाशगंगा के बिग डिपर नक्षत्र की दिशा से आ रहा है.

कैसे हुआ इस रेडियो सिग्नल का पता?

इस रेडियो सिग्नल की खोज एस्ट्रोनॉमर आइरिस डी रुइटर ने की, जो ऑस्ट्रेलिया की सिडनी यूनिवर्सिटी में शोध कर रही हैं. उन्होंने 2024 में लो फ़्रीक्वेंसी एरे (लोफर) टेलीस्कोप से मिले पुराने डेटा को खंगालते हुए इस सिग्नल को खोज निकाला. लोफर दुनिया का सबसे बड़ा रेडियो टेलीस्कोप है, जो बहुत कम फ़्रीक्वेंसी वाले रेडियो सिग्नल पकड़ सकता है. पहली बार यह सिग्नल 2015 के डेटा में देखा गया था. इसके बाद वैज्ञानिकों ने इस स्रोत से छह और बार ऐसे ही पल्स दर्ज किए.

ये रेडियो तरंगें कुछ सेकंड से लेकर कई मिनट तक चल सकती हैं, लेकिन इनकी विशेषता यह थी कि ये हर दो घंटे में नियमित रूप से दोहराती थीं.

व्हाइट ड्वार्फ क्या होता है?

व्हाइट ड्वार्फ एक ऐसा तारा होता है, जो अपने जीवन के अंतिम चरण में पहुंच चुका होता है. जब कोई तारा अपने ईंधन को जला चुका होता है, तो वह अपने बाहरी परतों को छोड़ देता है और उसका भीतरी भाग सिकुड़कर बहुत घना और छोटा हो जाता है.

यह सफेद रंग का चमकदार बिंदु बन जाता है, जिसे व्हाइट ड्वार्फ कहा जाता है.

क्या यह फास्ट रेडियो बर्स्ट जैसा है?

वैज्ञानिकों को यह सिग्नल ब्रह्मांड में होने वाली एक अन्य घटना, फास्ट रेडियो बर्स्ट (एफआरबी) के समान लगा, लेकिन दोनों में कुछ महत्वपूर्ण अंतर थे. थ्त्व केवल कुछ मिलीसेकंड के लिए चमकते हैं, जबकि यह नया सिग्नल कई सेकंड से लेकर कुछ मिनट तक जारी रहता है.

मृत तारे की चुंबकीय शक्ति का असर

अंतरिक्ष वैज्ञानिकों ने इस सिग्नल के स्रोत का विस्तृत अध्ययन किया और पता चला कि यह आईएलटीजे1101 नामक एक द्विगुणीय प्रणाली से आ रहा है, जो पृथ्वी से 1,600 प्रकाश-वर्ष की दूरी पर स्थित है. इसमें एक व्हाइट ड्वार्फ और एक रेड ड्वार्फ तारा बहुत करीब-करीब एक-दूसरे की परिक्रमा कर रहे हैं. इन दोनों तारों के बीच तीव्र चुंबकीय क्षेत्र है, जो रेडियो सिग्नल पैदा कर रहा है. जब यह व्हाइट ड्वार्फ अपने साथी तारे के पास से गुजरता है, तो उसकी शक्तिशाली चुंबकीय ऊर्जा रेड ड्वार्फ पर प्रभाव डालती है, जिससे रेडियो तरंगें पैदा होती हैं.

कैसे की गई गहराई से जांच?

वैज्ञानिकों ने इस प्रणाली की गहराई से जांच करने के लिए अमेरिका के एरिज़ोना स्थित मल्टीपल मिरर टेलीस्कोप और टेक्सास स्थित मैकडोनाल्ड ऑब्जर्वेटरी का इस्तेमाल किया. इन उपकरणों ने दिखाया कि रेड ड्वार्फ और व्हाइट ड्वार्फ हर 125. 5 मिनट में एक-दूसरे के चारों ओर घूम रहे हैं.

इसके बाद, वैज्ञानिकों ने इस प्रणाली की रोशनी को वेवलेंथ में विभाजित करके अध्ययन किया. इस प्रक्रिया से उन्हें पता चला कि रेड ड्वार्फ अत्यधिक गति से आगे-पीछे झूल रहा है, जो यह साबित करता है कि यह किसी अदृश्य साथी से गुरुत्वाकर्षण बल का प्रभाव झेल रहा है. यही अदृश्य साथी एक व्हाइट ड्वार्फ तारा निकला.

साप्ताहिक
सबका जम्मू कश्मीर

वी.एस. अच्युतानंदन : समझौताहीन संघर्ष की कम्युनिस्ट परंपरा के प्रतीक

पिनरायी विजयन, अनुवाद : संजय पराते

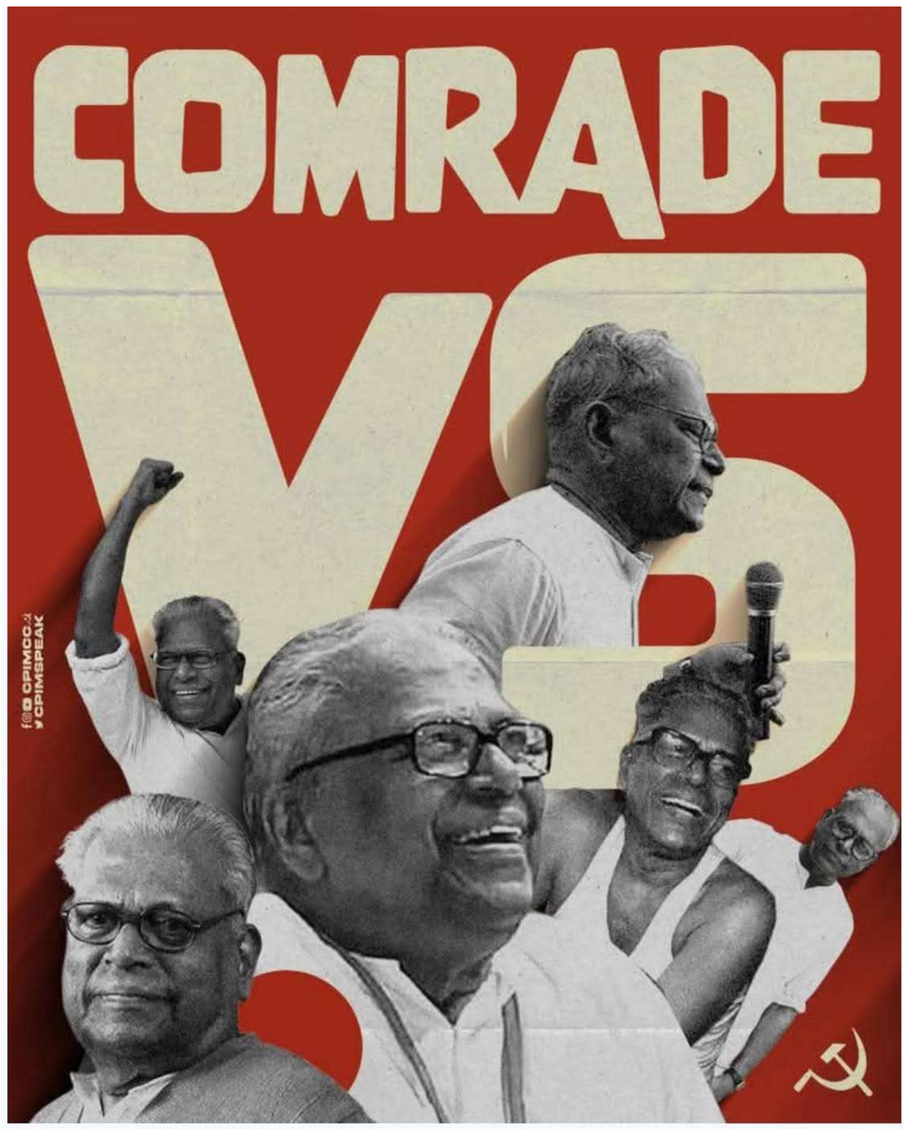

कॉमरेड वी.एस. अच्युतानंदन का जीवन, जिनका सोमवार (21 जुलाई, 2025) को 101 वर्ष की आयु में निधन हो गया, सामान्यतः केरल के इतिहास और विशेष रूप से, यहाँ के क्रांतिकारी आंदोलन का एक उल्लेखनीय अध्याय है।

कामरेड वी.एस. अच्युतानंदन संघर्षों की एक शानदार परंपरा, असाधारण दृढ़ संकल्प और अडिग संघर्षशीलता के प्रतीक थे। उनका एक शताब्दी लंबा जीवन केरल के आधुनिक इतिहास से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है, जिन्होंने जनता की समस्याओं को उठाया और जनता के साथ खड़े रहे। वी.एस. का केरल के इतिहास में अद्वितीय योगदान है, जिन्होंने विभिन्न चरणों में केरल सरकार, माकपा, वाम लो. कतांत्रिक मोर्चा और विपक्ष का नेतृत्व किया। इतिहास यह दर्ज करेगा कि वे केरल की राजनी. तिक विरासत का हिस्सा हैं।

वी.एस. का निधन एक युग का अंत है। इससे माकपा, क्रांतिकारी आंदोलन और संपूर्ण लोकतांत्रिक प्रगतिशील आंदोलन को भारी क्षति हुई है। पार्टी इस क्षति की भरपाई सामूहिक नेतृत्व के माध्यम से ही कर सकती है। यह वह समय है, जब लंबे समय तक साथ काम करने की कई यादें ताज़ा हो जाती हैं।

वी.एस. का जीवन असाधारण ऊर्जा और क्रांतिकारी आंदोलन की ताकत से भरा एक घटनापूर्ण जीवन था। वी.एस. का जीवन केरल और कम्युनिस्ट पार्टी के इतिहास का एक संघर्षपूर्ण अध्याय है। वी एस का राजनैतिक जीवन प्रबल सामंतवाद और जातिवाद के अंधकारमय दौर को बदलने के लिए किए गए संघर्षों के माध्यम से उभरा, जब उन्होंने मज़दूरों और किसानों के विद्रोहों को संगठित करके आंदोलन को विकसित किया। एक साधारण पृष्ठभूमि से, कम्युनिस्ट आंदोलन के विकास के चरणों के माध्यम से, वे केरल के मुख्यमंत्री के पद तक पहुँचे।

1964 में जब कम्युनिस्ट पार्टी का विभाजन हुआ, तो राष्ट्रीय परिषद छोड़ने वाले 32 लोगों में वे भी शामिल थे।वी.एस. के निधन के साथ ही यह आखिरी बची कड़ी भी टूट गई। इसके साथ ही एक मूल्यवान राजनीतिक उपस्थिति भी लुप्त हो गई, जिसने राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम और समकालीन राजनीति के बीच तालमेल बिठाए रखा था।

एक कम्युनिस्ट नेता, विधान सभा के सदस्य, विपक्ष के नेता और मुख्यमंत्री के रूप में, वी.एस. के अनेक योगदान हैं। वे पुन्नप्रा–वायलार संघर्ष के पर्याय बन गए थे, जिन्होंने कष्ट और सहनशीलता के साथ जीवनयापन किया।

वी.एस. बहुत तेज़ी से एक मज़दूर से मज़दूर वर्ग आंदोलन के एक सशक्त नेता बन गए। कम्युनिस्ट पार्टी ने वी.एस. को विकसित किया और वी.एस. ने पार्टी का विकास किया। 1940 में 17 साल की उम्र में वे कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बन गए थे और 85 साल की लंबी अवधि तक पार्टी के सदस्य रहे। वी. एस. कुट्टनाड गए और वहां उन्होंने खेतिहर मज़दूरों की उजरती गुलामी और जातिगत गुलामी को खत्म करने के लिए संघर्ष का नेतृत्व किया। उन्होंने कुट्टनाड के गाँवों में घूम–घूम कर खेतिहर मज़दूरों की बैठकें आयोजित कीं और उन्हें एक संगठित शक्ति के रूप में विकसित किया। उन्होंने यह काम ज़मींदारों और पुलिस को चुनौती देकर किया।

वी.एस. ने श्त्रावणकोर खेत मजदूर यूनियनश के गठन में और बाद में केरल के सबसे बड़े मजदूर आंदोलनों में से एक, श्केरल राज्य खेत मजदूर यूनियनश के रूप में इसके विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वी.एस. के नेतृत्व में अनगिनत संघर्षों ने कुट्टनाड के सामाजिक इतिहास को बदल दिया। वे बेहतर मजदूरी, चप्पा प्रथा के उन्मूलन, टिकाऊ रोजगार और अतिरिक्त भूमि की जब्ती के संघर्षों में सबसे आगे थे। खेतों की मेड़ों पर कई किलोमीटर पैदल चलकर और उनकी झोपड़ियों में जाकर उन्होंने खेत मजदूरों में आत्मविश्वास और टीम भावना जगाने का प्रयास किया, जिसके चलते खेत मजदूर बड़े पैमाने पर आंदोलन की ओर आकर्षित हुए।

1948 में पार्टी पर प्रतिबंध लगने के बाद उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। 1952 में, उन्हें पार्टी का अलप्पुझा संभाग सचिव चुना गया। इस दौरान, वे एकीकृत केरल के लिए कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा चलाए जा रहे आंदोलनों में सक्रिय रहे। 1957 में जब कम्युनिस्ट पार्टी सत्ता में आई, तो वे पार्टी के अलप्पुझा जिला सचिव और राज्य सचिवालय के सदस्य बने। 1959 में, वे पार्टी की राष्ट्रीय परिषद के सदस्य बने। वी.एस. ने अधिशेष भूमि संघर्ष सहित कई साहसी संघर्षों का नेतृत्व किया।

वे कुल मिलाकर, साढ़े पाँच साल से अधिक समय तक जेल में रहे। वे 1964 से सीपीआई (एम) केंद्रीय समिति के सदस्य थे। वे 1985 में पोलिट ब्यूरो के सदस्य बने। उन्होंने 1980 से 1992 तक सीपीआई (एम) के राज्य सचिव और 1996 से 2000 तक एलडीएफ संयोजक के रूप में कार्य किया। उन्होंने 2015 में कोलकाता में आयोजित 21वीं पार्टी कांग्रेस में वृद्धावस्था के कारण केंद्रीय समिति से इस्तीफा दे दिया। बाद में, वे केंद्रीय समिति के विशेष आमंत्रित सदस्य बनाए गए। वह 2001 से 2006 तक विपक्ष के नेता रहे। वह 2006 से 2011 तक मुख्यमंत्री रहे। वे 2011 से 2016 तक फिर से विपक्ष के नेता के रूप में कार्य करते रहे। वह एक ऐसे नेता हैं, जिन्होंने अपने सभी पदों पर अपनी अलग छाप छोड़ी है।

खेतिहर मज़दूरों और नारियल के रेशे बनाने वाले मज़दूरों की कठिनाइयों को व्यक्तिगत रूप से अनुभव करने के बाद, वी.एस. ने अपने अनुभवों को अपनी शक्ति में बदल दिया। वे शोषितों की मुक्ति के पक्षधर थे और इस कॉमरेड ने पूरे साहस के साथ खेत मज़दूरों के आंदोलन और कम्युनिस्ट आंदोलन को आगे बढ़ाया। पार्टी में विभाजन के बाद के दौर में उन्होंने संशोधनवाद और बाद में वामपंथी संकीर्णतावाद के विरुद्ध संघर्ष किया और पार्टी को सही रास्ते पर मज़बूती से टिकाए रखने में अहम भूमिका निभाई।

राजनीति की सीमाओं को लांघकर, वीएस ने पर्यावरण, मानवाधिकार और महिला समानता जैसे विभिन्न क्षेत्रों में भी काम किया। इसी प्रक्रिया में, पार्टी नेता रहते हुए भी वीएस को जनता की स्वीकृति मिली। वीएस ने सामाजिक महत्व के अन्य मुद्दों को मुख्यधारा के राजनीतिक मुद्दों से जोड़ने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

विधान सभा के सदस्य के रूप में भी कॉमरेड वी. एस. ने अद्वितीय योगदान दिया है। वे 1967 और 70 में अम्बालाप्पुझा से और 1991 में मारारिकुलम से विधान सभा के सदस्य बने। वे 2001 से 2021 तक पलक्कड़ जिले के मलमपुझा निर्वाचन क्षेत्र से विधायक रहे। उन्होंने 2016 से 2021 तक केरल प्रशासनिक सुधार आयोग के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया। मुख्यमंत्री के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान, उन्होंने पार्टी और वाम लोकतांत्रिक मोर्चे द्वारा बनाई गई नीतियों को लागू करके केरल के विकास को आगे बढ़ाया। उन्होंने संकटों में भी बिना किसी हिचकिचाहट के सरकार का नेतृत्व किया। विपक्ष के नेता के रूप में, उन्होंने सदन में कई लो. कप्रिय मुद्दे उठाए। उन्होंने विधायी मामलों में भी अपना योगदान दिया। वी.एस. एक ऐसे नेता हैं, जिन्होंने केरल के राजनीतिक इतिहास पर एक अनूठी छाप छोड़ी है।

कॉमरेड वी.एस. के निधन से पार्टी और देश को अपूरणीय क्षति हुई है।

(लेखक माकपा पोलिट ब्यूरो के सदस्य और केरल के मुख्यमंत्री हैं। अनुवादक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं। संपर्क रू 94242–31650)

मोहम्मद रफी की पुण्यतिथि पर कस्बा नगरी में सुरसंगम म्यूजिकल सोसाइटी द्वारा भावपूर्ण संगीतमय कार्यक्रम का आयोजन

युवाओं को नशे से दूर रहने और संगीत से जुड़ने का संदेश

राज कुमार

नगरी, महान पार्श्वगायक मोहम्मद रफी की पुण्यतिथि के अवसर पर कस्बा नगरी में सुरसंगम म्यूजिकल सोसाइटी द्वारा एक संगीतमय श्रद्धांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में युवाओं, संगीत प्रेमियों और स्थानीय नागरिकों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया।

कार्यक्रम की जानकारी देते हुए सुरसंगम म्यूजिकल सोसाइटी के अध्यक्ष टी. सी. बोगल ने कहा कि आज के समय में यदि कोई नशा करना है तो वह संगीत का होना चाहिए। उन्होंने कहा, "दूसरे नशों में क्या रखा है? गुरुदेव रविंद्रनाथ टैगोर ने कहा है कि संगीत का नशा सारे नसों के ऊपर होता है। यह तन–मन दोनों को स्वस्थ रखता है। मैं युवाओं से अपील करता हूं कि वे नशे से दूर रहें और संगीत की ओर आकर्षित हों।"

वही सुभाष चंद्र ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि जहां लोग नशे से अपनों को छोड़ चलते हैं वही संगीत अपनों से लोगों को जोड़ता है और जिंदगी की सच्ची राह दिखाता है जबकि रणजीत सिंह उर्फ विक्की ने युवाओं से अपील किया कि अगर कोई नशा करना ही है तो संगीत का करें ना की कोई दूसरा

कार्यक्रम में मोहम्मद रफी के प्रसिद्ध गीतों की प्रस्तुति दी गई, जिसे दर्शकों ने सराहा। इस दौरान रणजीत सिंह उर्फ विक्की, सुभाष चंद्र, अंशु सहित कई युवा संगीत प्रेमी भी मौजूद रहे। सभी ने मिलकर मोहम्मद रफी को याद किया और उनके अमर गीतों के माध्यम से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। सोसाइटी की ओर से बताया गया कि ऐसे आयोजन भविष्य में भी नियमित रूप से किए जाएंगे ताकि युवाओं को सकारात्मक दिशा मिल सके और संगीत के माध्यम से समाज में जागरूकता फैलाई जा सके।

साप्ताहिक राशिफल

मेष

मेष राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह कभी खुशी कभी गम लिए रहने वाला है। इस सप्ताह आपको निजी जीवन से लेकर करियर–कारोबार तक में उतार–चढ़ाव देखने को मिल सकते हैं। हालांकि सप्ताह की शुरुआत सामान्य रहने वाली है। इस दौरान व्यक्तिगत और पेशेवर रूप से खुद को मजबूत पाएंगे। कार्यक्षेत्र में अनुकूलता बनी रहेगी। युवाओं का अधिकांश समय मौज–मस्ती करते हुए बीतेगा। घर–परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। सप्ताह के मध्य में आपको करियर–कारोबार में कुछ अप्रत्याशित बदलाव को झेलना पड़ सकता है।

इस दौरान नौकरीपेशा लोगों के सिर पर अचानक से अतिरिक्त जिम्मेदारी का बोझ आ सकता है। जिसे पूरा करने के लिए आपको अधिक समय और ऊर्जा खर्च करने की आवश्यकता रहेगी।

वृषभ

वृष राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह मध्यम फलदायी है। वृष राशि के जो जातक किसी कार्य विशेष के लिए बीते कुछ समय से लगातार प्रयासरत हैं, उन्हें इस सप्ताह भी उससे जुड़ी सफलता के लिए इंतजार करना पड़ सकता है। सप्ताह के उत्तरार्ध के मुकाबले उनका पूर्वार्ध थोड़ा राहत भरा रहने वाला है।

ऐसे में इस राशि के जातकों को अपने करियर–कारोबार और जीवन से जुड़े अहम कार्यों को इसी दौरान करने का प्रयास करना चाहिए। सप्ताह के मध्य में किसी व्यक्ति विशेष से मेल–मुलाकात होगी। जिसकी मदद से अटके कार्यों में धीमी गति से ही लेकिन प्रगति होती नजर आएगी। सप्ताह के उत्तरार्ध में न सिर्फ कार्यक्षेत्र से जुड़ी बल्कि घर–परिवार से संबंधित समस्याएं भी आपकी परेशानी का कारण बन सकती हैं। इस दौरान पैतृक संपत्ति अथवा किसी जमीन–जायदाद को लेकर विवाद हो सकता है। अचानक से जीवन में तमाम तरह की समस्याएं सामने आने से आपका मन थोड़ा विचलित रह सकता है। हालांकि सुखद पहलू यह है कि इस दौरान आपके संगी–साथी आपकी ढाल बनेंगे और आपके साथ साए की तरह बने रहेंगे।

मिथुन

मिथुन राशि के जातकों को इस सप्ताह सौभाग्य का पूरा साथ मिलेगा। यदि आप किसी कार्य विशेष के लिए लंबे समय से प्रयासरत थे तो उम्मीद का दामन बिल्कुल न छोड़ें क्योंकि इस सप्ताह उसमें आ रही बाधाएं स्वतरू दूर होती हुई नजर आएंगी। सप्ताह के पूर्वार्ध का समय नौकरीपेशा लोगों के लिए अनुकूल रहने वाला है।

इस दौरान आपके शुभचिंतक आपको नेक सलाह देते हुए नजर आएंगे, जिस पर अमल करके आप अपनी चीजों को सुव्यवस्थित कर सकते हैं। सप्ताह के मध्य में किसी तीर्थ स्थान पर जाने का अचानक प्रोग्राम बन सकता है। इस पूरे सप्ताह घरेलू महिलाओं का मन धार्मिक–कार्यों में खूब रमेगा। किसी धार्मिक–आध्यात्मिक व्यक्ति की विशेष कृपा आप पर बरस सकती है। यदि आप व्यवसाय से जुड़े हुए हैं तो आपके लिए सप्ताह के पूर्वार्ध के मुकाबले उत्तरार्ध ज्यादा शुभ रहने वाला है। इस दौरान आप आप समझदारी के साथ अपने पैसे का सही जगह निवेश करते हैं तो आपको उससे भविष्य में बड़ा लाभ मिल सकता है। उच्च शिक्षा के लिए प्रयासरत लोगों के लिए यह सप्ताह गुडलक लेकर आएगा।

कर्क

कर्क राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह मिश्रित फलदायक रहने वाला है। इस सप्ताह इस राशि के जातकों को किसी भी फैसले को लेते समय जल्दबाजी करने से बचना चाहिए। रिश्ते–नाते में मिठास बनी रहे और किसी प्रकार की गलतफहमी न पैदा हो इसके लिए स्वजनों के साथ संवाद बनाए रखें।

सप्ताह की शुरुआत में आपको करियर–कारोबार के सिलसिले में बड़े फैसले लेने पड़ सकते हैं। ऐसा करते समय अपने शुभचिंतकों की सलाह अवश्य लें। यदि आप नौकरीपेशा व्यक्ति हैं तो अपने कार्यक्षेत्र में सीनियर और जूनियर को मिलाकर चलें। यदि कार्यक्षेत्र पर हालात आपके अनुकूल नहीं हैं तो आप उससे बजाय भागने के उसे बेहतर बनाने का प्रयास करें। भूलकर भी आवेश में आकर नौकरी में बदलाव जैसा फैसला लेने से बचें। सप्ताह के मध्य में घरेलू समस्याओं के चलते आपका मन थोड़ा खिन्न रहेगा। इस दौरान आपको आपके विरोधी आप पर हावी होने तथा आपके बनते काम बिगाड़ने की कोशिश कर सकते हैं।

सिंह

सिंह राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह मध्यम फलदायी रहने वाला है। इस सप्ताह इस राशि के जातकों को अपनी ऊर्जा, धन और समय का प्रबंधन करके चलना उचित रहेगा। सप्ताह की शुरुआत में आपके सिर पर अचानक से कुछ बड़े खर्च आ सकते हैं। इस दौरान कार्य विशेष के लिए लंबी दूरी की यात्रा पर भी अचानक निकलना पड़ सकता है। यात्रा सुखद और नये संपर्कों को बढ़ाने वाली साबित होगी। व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए सप्ताह के उत्तरार्ध के मुकाबले पूर्वार्ध का समय ज्यादा अनुकूल रहने वाला है। ऐसे में आपको अपने कारोबार से जुड़े बड़े फैसले इसी दौरान करने चाहिए। सप्ताह के मध्य में आप कुछ चीजों को लेकर खुद को असमंजस की स्थिति में पा सकते हैं। ऐसे में इस दौरान कोई बड़ा फैसला लेते समय अपने शुभचिंतकों की सलाह अवश्य लें। नौकरीपेशा जातकों इस सप्ताह अपने कार्य दूसरों के भरोसे छोड़ने की बजाय स्वयं बेहतर तरीके से पूरे करने का प्रयास करना चाहिए अन्यथा पूर्व में की गई न सिर्फ आपकी मेहनत बेकार जा सकती है, बल्कि वरिष्ठ अधिकारियों की डांट भी सुननी पड़ सकती है।

कन्या

कन्या राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह मिलाजुला रहने वाला है। यदि आप चाहते हैं कि आपको जीवन में मनचाही सफलता और खुशियां मिले तो आपको अपने कार्य और व्यवहार में आमूलचूल बदलाव लाना होगा और अपने शुभचिंतकों को नाराज करने से बचना होगा। इस सप्ताह आपकी किसी बात या व्यवहार से आपके अपने नाराज हो सकते हैं। वाद–विवाद बढ़ने पर वर्षों से बने रिश्ते में दरार आ सकती है। करियर–कारोबार से लेकर घर–परिवार में सब कुछ अच्छा बना रहे इसके लिए दूसरों से अपेक्षा करने करने की बजाय आपको खुद ही आगे बढ़कर प्रयास करना होगा।

यदि आप नौकरीपेशा व्यक्ति हैं तो अपने कार्यक्षेत्र में कनिष्ठ लोगों के साथ रुखा व्यवहार न करें और अपने वरिष्ठ लोगों के साथ अच्छा तालमेल बनाए रखें। यदि आप व्यवसायी हैं तो शार्टकट तरीके से लाभ कमाने से बचें और कागजी काम पूरे करके रखें। यदि आप पार्टनरशिप में व्यवसाय करते हैं तो धन का लेनदेन सावधानी के साथ करें।

तुला

तुला राशि के जातकों के लिए करियर और कारोबार की दृष्टि से यह सप्ताह उत्तम और रिश्ते–नाते की दृष्टि से मध्यम फलदायी रहने वाला है।

सप्ताह की शुरुआत में आपको करियर–कारोबार से जुड़ा कोई बहुप्रतीक्षित शुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। इस सप्ताह तुला राशि का नौकरीपेशा जातक हो या फिर व्यवसाय से जुड़ा कारोबारी, वह अपना शत प्रतिशत अपने कार्य में देता हुआ नजर आएगा।

खास बात कि उसके प्रयासों को सौभाग्य का भी पूरा साथ मिलेगा। कार्यक्षेत्र में अनुकूलता बनी रहेगी और सीनियर आपके कामकाज की खुले मन से प्रशंसा करते हुए नजर आएंगे। सप्ताह के अंत तक आपको बड़ा पद अथवा अहम जिम्मेदारी मिल सकती है। यदि आप लंबे समय से किसी नये कारोबार की शुरुआत करने अथवा किसी बड़ी डील को फाइनल करने के लिए प्रयासरत थे तो आपकी यह मनोकामना इस सप्ताह पूरी हो सकती है। यदि आप लंबे समय से रोजी–रोजगार के लिए प्रयासरत थे तो सप्ताह के उत्तरार्ध में आपकी यह मनोकामना पूरी हो सकती है।

वृश्चिक

वृश्चिक राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह गुडलक लिए है। इस सप्ताह आपको जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में शुभता–सफलता की प्राप्ति होगी। इस सप्ताह आपके सोचे हुए कार्य समय पर पूरे होंगे। करियर–कारोबार में मनचाही प्रगति होती नजर आएगी। कार्यक्षेत्र में आपको सीनियर और जूनियर दोनों का सहयोग और समर्थन मिलेगा। व्यवसाय में अच्छा मुनाफा कमाएंगे। यदि आपके कारोबार में बीते समय से कोई अड़चन आ रही थी इस सप्ताह वह किसी व्यक्ति विशेष की मदद से दूर हो जाएगी। मार्केट में आपकी साख बढ़ेगी। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय करते हैं तो आप उसके विस्तार की योजना पर काम करेंगे। आपकी योजना को साकार रूप देने के लिए आपके शुभचिंतक और परिजन पूरी मदद करेंगे। इस संबंध में घर–परिवार के किसी वरिष्ठ सदस्य की सलाह लाभदायी साबित होगी। यह सप्ताह पठन–पाठन एवं शोध से जुड़े कार्यों को करने वालों के लिए अत्यधिक शुभ साबित होगा।

धनु

धनु राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह जीवन के नये अवसरों को लेकर आने वाला है, लेकिन उसका लाभ उठाने के लिए आपको आलस्य और आशंका को त्याग कर कठिन परिश्रम और प्रयास करना होगा। इस सप्ताह यदि आप अपने धन, समय और उर्जा का सही दिशा में उपयोग करते हैं तो आपको आशा से अधिक सफलता और लाभ मिल सकता हैं। वहीं इसकी अनदेखी करने पर बनते काम बिगड़ जाने से मन में निराशा के भाव जाग सकते हैं। धनु राशि के जातकों को इस सप्ताह खुले हाथ धन खर्च करने से बचना चाहिए अन्यथा सप्ताह के अंत तक उन्हें उधार मांगने की नौबत आ सकती है। व्यवसाय की दृष्टि से यह सप्ताह आपके लिए मिश्रित फलदायी साबित होने वाला है। इस सप्ताह आपको कारोबार में लाभ तो होगा लेकिन साथ ही साथ खर्च की अधिकता भी बनी रहेगी। धनु राशि के जातकों को इस सप्ताह मौसमी बीमारी को लेकर सतर्क रहने की आवश्यकता रहेगी। अपनी दिनचर्या और खानपान सही रखें अन्यथा पेट संबंधी दिक्कतें हो सकती है। परीक्षा–प्रतियोगिता की तैयारी में जुटे छात्रों को सप्ताह के मध्य में किसी सुखद समाचार की प्राप्ति संभव है।

मकर

मकर राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह उतार–चढ़ाव लिए रहने वाला है। इस सप्ताह आप अपने करियर–कारोबार में आ रही अड़चनों को लेकर चिंतित रह सकते हैं। कार्यक्षेत्र और कारोबार के अलावा निजी जीवन से जुड़ी समस्याएं भी आपकी बड़ी चिंता का कारण बनेंगी। हालांकि जीवन के कठिन समय में आपके शुभचिंतक एवं परिजन काफी मददगार साबित होंगे और काफी हद तक आप इन समस्याओं का समाधान खोजने में भी कामयाब होंगे। सप्ताह के मध्य में किसी भी कार्य को करते समय विशेष सावधानी बरतें। इस दौरान जल्दबाजी या असमंजस की स्थिति में लिया गया निर्णय आपके लिए हानिकारक साबित हो सकता है। इस दौरान स्वजनों के साथ बात–व्यवहार करते समय विनम्रता से पेश आएं अन्यथा लंबे समय से बने हुए रिश्तों में दरार आ सकती है। इस सप्ताह खर्च की अधिकता के चलते आपका बजट थोड़ा गड़बड़ा सकता है। सप्ताह के उत्तरार्ध में करियर–कारोबार के सिलसिले में लंबी दूरी की यात्रा पर निकलना पड़ सकता है।

कुंभ

जीवन में आने वाली छोटी–मोटी दिक्कतों को यदि नजरअंदाज कर दें तो कुंभ राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह शुभ साबित होगा। इस सप्ताह आपको आपकी मेहनत का पूरा फल प्राप्त होगा। करियर और कारोबार की दिशा में किए गये प्रयास सफल होंगे और आपके पद एवं प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

राजनीति से जुड़े लोगों के लिए यह सप्ताह गुडलक लिए हुए है। इस सप्ताह आपकी झोली में कोई बड़ा पद गिर सकता है। सत्तापक्ष से जुड़े लोगों के साथ आपका मेल–मिलाप बढ़ेगा। आपके मान–सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी। नौकरीपेशा लोगों को कार्यक्षेत्र में अनुकूलता बनी रहेगी। आप अपनी सूझबूझ से अपने विरोधियों पर काबू पाने में कामयाब होंगे। कुंभ राशि के जो जातक तकनीक के क्षेत्र से जुड़े हुए हैं, उनके लिए यह सप्ताह अत्यंत ही शुभ साबित होगा। इसी प्रकार इलेक्ट्रानिक का कारोबार करने वालों को बड़े लाभ की प्राप्ति होगी। सप्ताह के उत्तरार्ध में किसी वरिष्ठ एवं अनुभवी व्यक्ति से कार्य विशेष के लिए मार्गदर्शन प्राप्त होगा।

मीन

मीन राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह मिलाजुला रहने वाला है। सप्ताह के पूर्वार्ध का समय जहां अनुकूल तो वहीं उत्तरार्ध थोड़ा प्रतिकूल रहने वाला है। ऐसे में मीन राशि के जातकों को जीवन से जुड़े महत्वपूर्ण कार्यों सप्ताह की शुरुआत में ही निबटाने का प्रयास करना चाहिए। यदि आप बेरोजगार हैं तो आपको इसी दौरान पूरे मनोयोग से रोजी–रोजगार के लिए प्रयास करना चाहिए। इस दौरान किसी व्यक्ति विशेष की मदद से भूमि–भवन से जुड़े विवाद का समाधान निकल सकता है। मीन राशि के जातकों को इस सप्ताह इस बात का पूरा ख्याल रखना होगा कि उनकी बात से ही बात बनेगी और बात से ही बात बिगड़ भी सकती है। ऐसे में अपना काम निकलवाने के लिए लोगों की प्रशंसा करने में जरा भी कंजूसी न करें और सभी के साथ अच्छा तालमेल बनाए रखें। सप्ताह के पूर्वार्ध में आपके घर में कोई धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यक्रम संपन्न हो सकता है। इस दौरान घरेलू महिलाओं का अधिकांश समय पूजा–पाठ में बीतेगा।

साप्ताहिक
सबका जम्मू कश्मीर

रक्षाबंधन : प्रेम, विश्वास और रक्षा का बंधन

भारतवर्ष त्योहारों की भूमि है, और उन सभी में रक्षाबंधन एक ऐसा पर्व है जो केवल धार्मिक नहीं, बल्कि भावनात्मक और सामाजिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह पर्व भाई और बहन के पवित्र रिश्ते को सम्मान देने और उसे निभाने का प्रतीक है।

रक्षाबंधन का अर्थ है दृ रक्षा का बंधन। इस दिन बहन अपने भाई की कलाई पर राखी बाँधती है और उसकी लंबी उम्र, सफलता और सुरक्षा की कामना करती है। बदले में भाई यह वचन देता है कि वह जीवनभर अपनी बहन की रक्षा करेगा दृ न केवल शारीरिक रूप से, बल्कि भावनात्मक, सामाजिक और मानसिक रूप से भी।

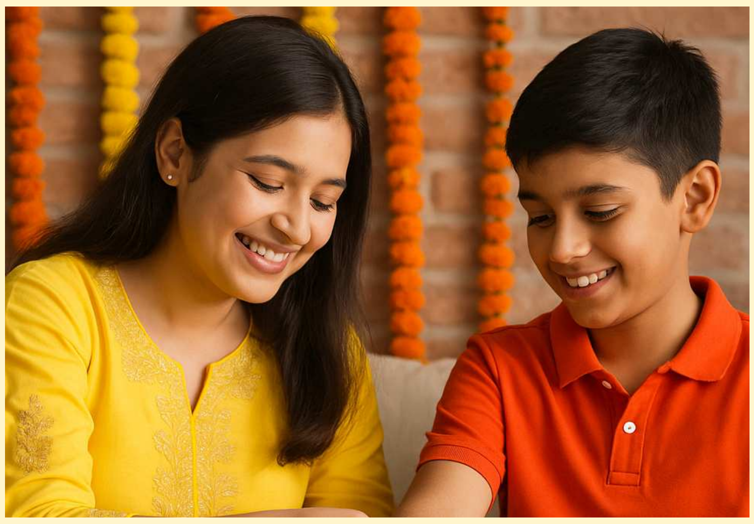

राखी से जुड़ी भावना

राखी सिर्फ एक रंगीन धागा नहीं होती, यह भावनाओं का बंधन है। इसमें बचपन की यादें, शरारतें, लड़ाइयाँ और अनकहा अपनापन बसा होता है। कभी चॉकलेट के लिए झगड़े, तो कभी होमवर्क में मदद दृ ये सब यादें रक्षाबंधन के दिन और भी खास हो जाती हैं।

समय के साथ बदलते रूप

आज के समय में जब बहनें आत्मनिर्भर हो चुकी हैं और भाई–बहन अक्सर अलग शहरों या देशों में रहते हैं, रक्षाबंधन एक और रूप ले चुका है। अब राखी डाक से भेजी जाती है, वीडियो कॉल पर राखी बांधी जाती है, लेकिन भावनाएं वही रहती हैं दृ सच्ची, गहरी और सशक्त।

सिर्फ रिश्तों का नहीं, मूल्य का उत्सव

रक्षाबंधन केवल खून के रिश्तों तक सीमित नहीं। कई बहनें अपने मनपसंद भाई को राखी बाँधती हैं, चाहे वह रिश्ते में ना हो। कई महिलाएं सैनिकों, डॉक्टरों और सामाजिक कार्यकर्ताओं को राखी बाँधकर उन्हें सम्मानित करती हैं। यह बताता है कि रक्षाबंधन 'संरक्षण' और 'सम्मान' का भी त्योहार है।

रक्षाबंधन हमें यह सिखाता है कि एक मजबूत समाज वही होता है जहाँ रिश्तों में प्रेम, सम्मान और ज़िम्मेदारी हो। यह पर्व केवल बहन की रक्षा तक सीमित नहीं, बल्कि उसके सपनों, आत्मसम्मान और स्वतंत्रता की रक्षा का वादा भी होना चाहिए। राखी का धागा सिर्फ सजावट नहीं दृ यह वादा है, भावना है, और विश्वास है।

रक्षाबंधन की आप सभी को शुभकामनाएँ!

बाग नाले पर बन रहे पुल के गलत एलाइनमेंट को लेकर स्थानीयों में नाराज़गी, विधायक विजय शर्मा ने मौके पर पहुंचकर लिया जायज़ा

लोगों ने अधिकारियों पर घरों को बचाने के लिए एलाइनमेंट बदलवाने का लगाया आरोप

सनी शर्मा

मढ़ीन, 1 अगस्तरू तहसील मढ़ीन के साथ लगते बाग नाले पर हो रहे पुल निर्माण को लेकर विवाद बढ़ता जा रहा है। शुक्रवार को स्थानीय लोगों ने पुल की गलत एलाइनमेंट को लेकर विरोध जताया और आरोप लगाया कि कुछ अधिकारी पुल निर्माण की दिशा में बदलाव करके उन घरों को बचाने का प्रयास कर रहे हैं जो निर्माण क्षेत्र में आ रहे थे।

लोगों का कहना है कि यह परिवर्तन न केवल तकनीकी रूप से गलत है, बल्कि इससे सरकारी संसाधनों की भी बर्बादी हो रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि कुछ प्रभावशाली लोगों के दबाव में पुल का एलाइनमेंट बदलने की कोशिश की जा रही है, जिससे परियोजना की गुणवत्ता और स्थायित्व पर सवाल खड़े हो रहे हैं।

अधिकारियों से बात करते हीरानगर विधायक एडवोकेट विजय शर्मा

विधायक पहुंचे मौके पर

विवाद की जानकारी मिलने पर क्षेत्रीय विधायक एडवोकेट विजय शर्मा स्वयं मौके पर पहुंचे और पुल निर्माण स्थल की स्थिति का जायजा लिया। उन्होंने स्थानीय लोगा. ें से बातचीत कर उनकी चिंताओं को सुना और आश्वासन दिया कि मामले की निष्पक्ष जांच होगी।

विधायक विजय शर्मा ने हीरानगर एसडीएम से बात कर एलाइनमेंट और निर्माण प्रक्रिया की स्थिति पर चर्चा की। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि यदि किसी तरह की अनियमितता हो रही है तो उसे तुरंत रोका जाए और निर्माण कार्य को पारदर्शिता व तकनीकी मानकों के अनुरूप आगे बढ़ाया जाए।

स्थानीय निवासियों ने स्पष्ट रूप से कहा कि वे किसी भी तरह की पक्षपातपूर्ण योजना को स्वीकार नहीं करेंगे। उन्होंने मांग की कि पुल का निर्माण पूर्व निर्धारित तकनीकी नक्शे के आधार पर हो और यदि किसी भी स्तर पर दबाव या धांधली की पुष्टि होती है, तो संबंधित अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की जाए।

इस मौके पर एसडीएम हीरानगर में विधायक एडवोकेट विजय शर्मा से बात करते हुए कहा कि उन्हें सिर्फ निर्माण कार्य कर रही बी आर ओ को जमीन एक्वायर करके दी है ना कि एलाइनमेंट का कार्य उनका है हालांकि एसडीएम ने आगे बात करते हुए कहा कि अगर लोगों को लगता है कि एलाइनमेंट गलत है तो इसको लेकर मैं बी आर ओ विभाग से बात करेंगे और उनकी ओर से यह सुनिश्चित करवाएंगे की किसी गलत प्रकार की एलाइनमेंट ना

Helpline

पुलिस स्टेशन

बाग–ए–बहू	2459777
बख्शी नगर	2580102
बस स्टैंड	2575151
शहर	2543688
गांधी नगर	2430528
गंग्याल	2482019
नौबाद	2571332
पक्का डांगा	2548610
रेलवे स्टेशन	2472870
सैनिक कॉलोनी	2462212
सतवारी	2430364
चन्नी हिम्मत	2465164
ट्रांसपोर्ट नगर	2475444
त्रिकुटा नगर	2475133
गांधी नगर	2459660
एसएसपी शहर	2561578
एसपी शहर उत्तर	2547038
एसपी दक्षिण	2433778

सार्वजनिक उपयोगिता सेवाएँ

इंडियन एयर लाइन्स	
शहर कार्यालय	2542735
एयर पोर्ट	2430449
जेट एयर वेज़	2453999
सिटी ऑफिस	2573399

रेलवे

रेलवे पूछताछ	131, 132, 2476407
बुकिंग	2470318
आरक्षण	2470315

पब्लिक हेल्थ इंजीनियरिंग स्टेशन

बख्शी नगर	2543557
गांधी नगर	2430786
कंपनी बाग	2542582
नया प्लॉट	2573429
पंजतीर्थी	2547537

दूरसंचार विभाग

डायरेक्टरी पूछताछ	197
फॉल्ट रिपेयर	198
ट्रंक बुकिंग	180
बिलिंग शिकायत	2543896

जम्मू नगर पालिका

जं. लाइन्स	2578503
प्रशासन अधिकारी	2542192
स्वास्थ्य अधिकारी	2547440

डाक सेवाएँ

मुख्य डाकघर शहर	2543606
गाँधी नगर	2435863

अग्निशमन सेवाएँ

नियंत्रण कक्ष	101,132, 2476407
शहर	2544263
गाँधी नगर	2457705
नहर	2554064
गंग्याल	2480026

रसोई गैस डीलर

चिनाब गैस	2547633
गुलमौर गैस	2430835
जैकफेड	2548297
एचपी गैस	2578456
शिवांगी गैस	2577020
तवी गैस	2548455

पावर हाउस

गाँधी नगर	2430180
नहर रोड	2554147
जानीपुर	2533828
नानक नगर	2430776
परेड	2542289
सतवारी कैंट	2452813

अस्पताल	
जीएमसी अस्पताल	2584290
एस.एम.जी.एस. अस्पताल	2547635
सी.डी. अस्पताल	2577064
डेंटल अस्पताल	2544670
गांधी नगर अस्पताल	2430041
सरवाल अस्पताल	2579402
जी.बी. पंत कैंट अस्पताल	2433500
आयुर्वेदिक कॉलेज	2543661
सी.आर.पी. अस्पताल	2591105
आचार्य श्री चंदर	2662536
मानसिक अस्पताल	2577444
स्वामी विवेकानंद	2547418
ब्लड बैंक	2547637
एम्बुलेंस	2584225, 2575364
एम्बुलेंस (रेड क्रॉस)	2543739

नर्सिंग होम

मददन अस्पताल	2456727
मेडिकेयर	2435070
त्रिवेणी नर्सिंग होम	2452664
सुविधा नर्सिंग होम	2555965
अल. फिरदौस नर्सिंग होम	2545050
आस्था नर्सिंग होम	2576707
बी एन चौरिटेबल ट्रस्ट	2505310
चोपड़ा नर्सिंग होम	2573580
हरबंस सिंह मेम हॉस्पिटल	2541952
जीवन ज्योति	2576985
युद्धवीर नर्सिंग होम	2547821
मीडियाएड नर्सिंग होम	2466744
सीता नर्सिंग होम	2435007
विभूति नर्सिंग होम	2547969
रामेश्वर नर्सिंग होम	2580601
बी एन चेरिटेबल	2555631
महर्षि दयानंद	2545225

जब कर्तव्य बन जाए मौत की सज़ा, इंसानियत की पुकार

स्कूल जाते समय बाढ़ ग्रस्त नाले में गिरकर दो शिक्षकों की मौत; शिक्षा जगत ने उठाई प्रशासनिक सुधार की मांग

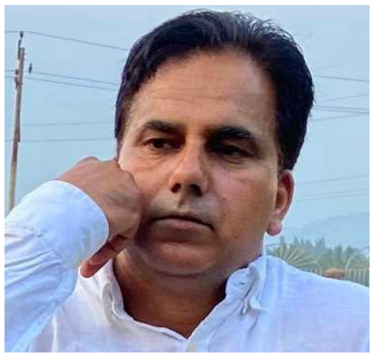

अनिल भारद्वाज

जम्मू/राजौरी : बुधवार शिक्षा जगत के लिए एक बेहद दुखद दिन रहा, जब दो समर्पित शिक्षक स्कूल जाते समय बाढ़ से उफनते नाले में गिरकर अपनी जान गंवा बैठे। इस दर्दनाक हादसे ने एक बार फिर प्रशासनिक सुधारों की ज़रूरत को ज़ोरदार तरीके से सामने लाया है, जिससे शिक्षकों की सुरक्षा को कागजी औपचारिकताओं से ऊपर रखा जा सके।

रहबर ए तालीम टीचर फोरम के लीडर अफताब तांत्रे ने नम आंखों में कहा घर से स्कूल जा रहे और बाढ़ के नाले में बह कर जान जान गवाने वाले ये शिक्षक सिर्फ सरकारी आंकड़ों में दर्ज नाम नहीं थे, ये किसी के प्यारे बेटे थे, जीवनसाथी थे, और बच्चों के लिए आदर्श अभिभावक। उनके परिवार आज उस खालीपन से जूझ रहे हैं जिसे कोई वादा या मुआवज़ा कभी नहीं भर सकता।

यह हादसा कोई अलग घटना नहीं है, बल्कि एक व्यापक प्रणालीगत विफलता का संकेत है ऐसी प्रणाली जो शिक्षकों की जान की कीमत पर उपस्थिति रजिस्टर को प्राथमिकता देती है। यह बार–बार की चेतावनियों के बावजूद बरती जा रही प्रशासनिक लापरवाही को उजागर करता है।

प्रशासन जानता है कि कई स्कूल दूरद. राज और आपदा–प्रवण क्षेत्रों में स्थित हैं, जहाँ शिक्षकों को रोज़ाना नदियाँ पार करनी होती हैं, भूस्खलन वाले रास्तों से गुजरना पड़ता है, और चरम मौसम का सामना करना पड़ता है इसके बावजूद निर्णय लेने में हो रही देरी को "चौंकाने वाली उदास. ीनता" बताया जा रहा है।

आज के हादसे में स्कूल बंद करने का आदेश सिर्फ 30 मिनट पहले जारी किया गयाकृतब तक ज़्यादातर शिक्षक अपने घरों से निकल चुके थे, कुछ के लिए यह उनकी ज़िंदगी की अंतिम यात्रा बन गई। और ज्यादातर बच्चे बारिश में जान जोखिम में डाल स्कूलों मपहुंच चुके थे खराब मौसम में स्कूल बंद रखने का आदेश तब आया।

"यह पहली बार नहीं है जब इतनी बेरुखी दिखाई गई हो। जब समय पर अलर्ट और स्कूल बंदी से जान बच सकती है, तो फैसले खतरे के बाद ही क्यों होते हैं?"

यह घटना एक बार फिर उन दबावों को उजागर करती है जो शिक्षक रोज़ झेलते हैं। उन्हें हर दिन तीन अलग–अलग तरीक. ों से उपस्थिति दर्ज करनी पड़ती है पेपर, ऑनलाइन और बायोमेट्रिक जिससे उनके ईमान पर संदेह का वातावरण बनता जा रहा है।

"जैसे उनकी उपस्थिति और ईमानदारी हर पल शक के घेरे में हो," एक शिक्षा कार्यकर्ता ने कहा। "जैसे उनके पैरों की कीचड़, टूटी सड़कों पर तय की गई दूरियां, और रोज़ की कुर्बानियाँ काफी नहीं हैं।"

और अब, शिक्षकों की तनख्वाह भी (श्रज्ञ ।जजमदकंदबम ।चच) जम्मू कश्मीर अटेंडेंस ऐप से जोड़ दी गई है , जबकि यह नियम सिर्फ शिक्षा विभाग पर लागू है। यह भेदभावपूर्ण रवैया अन्य विभागों की तुलना में शिक्षकों के साथ दोहरे मापदंड का संकेत देता है।

शिक्षा समुदाय का कहना है कि यह मामला सिर्फ नीतियों और नियमों का नहीं है, बल्कि यह मानवीय गरिमा, कार्यस्थल की सुरक्षा, और शिक्षकों को "ट्रैकिंग आईडी" के बजाय इंसान के रूप में देखने की मांग का सवाल है।

शिक्षकों ने हमेशा हर तूफानकृचाहे वो मौसम हो या व्यवस्था का डटकर सामना किया है, आतंक बाद का सामना कर बन्द स्कूल खोले फिर भी उनकी निष्ठा पर सवाल उठते हैं, जान को खतरे में डाला जाता है, और उनकी कुर्बानियों को नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है।

यह किसी व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह नहीं है, बल्कि एक संवेदनशील अपील है ऐसी नीति बनाने की जो केवल नियमों पर नहीं, संवेदना पर आधारित हो।

इस हादसे के बाद शिक्षा जगत ने ज़ोरदार मांग की है :

– स्कूल बंदी के दिशा–निर्देशों की व्यापक समीक्षा, आपातकालीन चेतावनी प्रणाली का तत्काल कार्यान्वयन, बेहतर संचार प्रणाली, और ऐसी उपस्थिति प्रणाली में बदलाव जो लाभ से अधिक बोझ बन चुकी है

जब पूरा शिक्षा समुदाय इस दुखद और टाली जा सकने वाली मौत पर शोक मना रहा है, तो एक ही आवाज़ उठ रही है।

"भगवान करे, यह अंतिम बार हो जब हम लापरवाही के कारण किसी शिक्षक को खोएं। नीतियाँ सिर्फ लागू करने के लिए नहीं, संवेदना से प्रेरित हों।

पहले उन्हें ज़िंदा रहने दो, फिर उन्हें पढ़ाने दो।

हर शिक्षक के लिए एक संदेश : पहले जीवन, फिर कर्तव्य।"

जम्मू कश्मीर के रामनगर में नाला पार करते समय पानी में बह जाने से जान गवाने वाले शिक्षकों का अफसोस सब को हैं। जिसने सुना उसी की आंखे नम हो गई। दोनों मृतक शिक्षक संजय कुमार और जगदेव सिंह जो ड्यूटी प्रशिक्षण के लिए डाइट कुद जा रहे थे उनकी पहचान कर पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

हीरानगर डिग्री कॉलेज में खाद्य प्रसंस्करण की इंटर्नशिप शुरू

उद्यान विभाग कठुआ के सहयोग से छात्र सीख रहे हैं जैम, स्क्वैश और सॉस बनाना

सनी शर्मा

हीरानगर : राजकीय गिरधारी लाल डोगरा मेमो. रियल डिग्री कॉलेज, हीरानगर में फूड प्रोसेसिंग (खाद्य प्रसंस्करण) पर आधारित इंटर्नशिप कार्यक्रम की शुरुआत की गई है। यह कार्यक्रम सेमेस्टर–5 के छात्रों के लिए उद्यान विभाग कठुआ के सहयोग से चलाया जा रहा है। कार्यक्रम की शुरुआत कॉलेज की प्राचार्य प्रो. प्रज्ञा खन्ना और बॉटनी विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. हरविंदर कौर के मार्गदर्शन में हुई। इस इंटर्नशिप में छात्रों को फल और सब्जियों से बने उत्पाद जैसे नींबू स्क्वैश, टमाटर सॉस और सेब जैम बनाना सिखाया जा रहा है। छात्रों को यह प्रशिक्षण उद्यान विभाग से आए प्रशिक्षक कमल शर्मा व सचिन दे रहे हैं। छात्रों ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया और फूड प्रोसेसिंग से जुड़ी तकनीक. ों को सीखने में रुचि दिखाई। हाल ही में आयोजित सत्र में छात्रों ने सेब से स्वादिष्ट जैम तैयार किया। इस मौके पर प्राचार्य प्रो. प्रज्ञा खन्ना, डॉ. हरविंदर कौर, प्रो. रमन कुमार और प्रो. दिव्या दत्ता ने छात्रों के काम की सराहना की। यह इंटर्नशिप छात्रों को व्यावहारिक ज्ञान के साथ–साथ स्वरोजगार और उद्यमिता की दिशा में भी प्रेरित कर रही है। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को कौशल आधारित शिक्षा देना और उन्हें भविष्य के लिए तैयार करना है।

एसबीएसपी सोपोर जिला टीम ने पार्टी अध्यक्ष विवेक बाली से की जल संकट पर बातचीत

समस्या के जल्द समाधान का मिला भरोसा

राज कुमार

श्रीनगर, सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी (एसबीएसपी) की सोपोर जिला टीम ने आज श्रीनगर स्थित पार्टी कार्यालय में प्रदेश अध्यक्ष विवेक बाली से मुलाकात की और सोपोर क्षेत्र में लंबे समय से जारी जल संकट को लेकर चर्चा की।

बैठक के दौरान नेताओं ने बताया कि सोपोर में वर्षों से पानी की भारी समस्या बनी हुई है, जिससे आम लोगों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। इस पर विवेक बाली ने चिंता जताते हुए भरोसा दिलाया कि इस मुद्दे को जल्द ही प्रशासन के सामने उठाया जाएगा।

उन्होंने कहा, "पानी हर इंसान की बुनियादी जरूरत है। सोपोर के लोगों को प्रशासन की लापरवाही की वजह से परेशानी नहीं झेलनी चाहिए। हम इस समस्या को बड़े अधिकारियों तक पहुंचाएंगे और तब तक चौन से नहीं बैठेंगे जब तक स्थायी समाधान नहीं हो जाता।"

बैठक में एसबीएसपी के कई वरिष्ठ नेता शामिल रहे। इनमें बारामुल्ला ज़िला अध्यक्ष मुदासिर डार, युवा ज़िला अध्यक्ष जुमैर मलिक, सोपोर विधानसभा अध्यक्ष मोहम्मद अशरफ डार, ब्लॉक अध्यक्ष मोहम्मद अशरफ मीर, वरिष्ठ नेता बशीर अहमद मीर, गुलाम नबी नज़र, इश्फाक हसन, मोहसिन हुसैन खान और मोहम्मद मकबूल शाह शामिल थे।

पार्टी ने दोहराया कि जब तक सोपोर में लोगों को पानी की सुविधा नहीं मिल जाती, तब तक एसबीएसपी उनके साथ खड़ी रहेगी। पार्टी ने सभी आवश्यक कदम उठाने का संकल्प भी लिया।

एसबीएसपी प्रदेश अध्यक्ष विवेक बाली ने रैनावाड़ी में अग्निकांड पीड़ित परिवारों से की मुलाकात, सरकार से तत्काल राहत पैकेज की मांग

सबका जम्मू कश्मीर

श्रीनगर, 1 अगस्त : सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी (एसबीएसपी) के प्रदेश अध्यक्ष विवेक बाली ने शुक्रवार को श्रीनगर के रैनावाड़ी क्षेत्र में हाल ही में हुए भीषण अग्निकांड से प्रभावित परिवारों से मुलाकात की और उनकी पीड़ा को लेकर गहरी संवेदना व्यक्त की।

दौरे के दौरान उन्होंने पीड़ितों को भरोसा दिलाया कि पार्टी इस मुश्किल समय में उनके साथ खड़ी है और हरसंभव सहयोग प्रदान करेगी। विवेक बाली ने सरकार से मांग की कि आग से प्रभावित परिवारों को तुरंत राहत पैकेज जारी किया जाए और आर्थिक सहायता, पुनर्वास व अन्य जरूरी सेवाएं तत्काल उपलब्ध कराई जाएं।

मीडिया से बातचीत करते हुए प्रदेश अध्यक्ष ने कहा, ष्यह प्रशासन की जिम्मेदारी है कि संकट के समय में किसी भी पीड़ित परिवार को बेसहारा न छोड़ा जाए। त्वरित राहत और पुनर्वास के जरिए ही इन परिवारों को दोबारा अपने पैरों पर खड़ा होने का अवसर दिया जा सकता है।

इस दौरान एसबीएसपी जिला अध्यक्ष श्रीनगर ओमैर मलिक और जिला युवा अध्यक्ष बिलाल भी विवेक बाली के साथ मौजूद रहे।

दोनों नेताओं ने भी पीड़ितों की समस्याओं को गंभीरता से उठाते हुए प्रशासन से शीघ्र कार्रवाई की मांग की।

स्थानीय लोगों ने एसबीएसपी प्रतिनिधिमंडल का स्वागत करते हुए उम्मीद जताई कि उनके मुद्दों को उचित मंच पर उठाया जाएगा और उन्हें जल्द राहत मिलेगी।

साप्ताहिक
सबका जम्मू कश्मीर

सांझी मोड़ बॉर्डर पर पूर्व सैनिकों की जन सेवा सभा, समस्याएं सुनी गई, जल्द समाधान का भरोसा

सनी शर्मा

मढ़ीन : तहसील मढ़ीन के सांझी मोड़ बॉर्डर पर मंगलवार को पूर्व सैनिक कल्याण बॉर्डर यूनियन और वेलफेयर एसोसिएशन की ओर से एक बड़ा जन सेवा कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला सैनिक बोर्ड कठुआ के सचिव श्री चहल ने की।

इस दौरान बॉर्डर क्षेत्र के बड़ी संख्या में पूर्व सैनिक, वीर नारियां और शहीदों की विधवाएं शामिल हुईं। सभी ने मंच पर अपनी समस्याएं खुलकर रखीं। उपस्थित अधिकारियों ने उनकी समस्याएं गंभीरता से सुनीं और समाधान का भरोसा दिलाया। सभा में मुख्य रूप से पूर्व सैनिकों के लिए चलाई जा रही सरकारी योजनाओं और सुविधाओं पर चर्चा की गई। मोबाइल कैंटीन सुविधा, ईसीएचएस में दवाइयों की उपलब्धता, नौकरियों में आरक्षण, ओआरआ.`पी का लाभ, दिव्यांग बच्चों को सहायता और शहीद स्मारक जैसे अहम मुद्दे सामने आए। जबकि बॉर्डर क्षेत्रों में मोबाइल कैंटीन की सुविधा शुरू की जाए, ईसीएचएस में सभी आवश्यक दवाइयां उपलब्ध कराई जाएं, पूर्व सैनिकों को सरकारी नौकरियों में तय आरक्षण मिले, शहीदों की स्मृति में युद्ध स्मारक (वार मेमोरियल) का निर्माण हो, दिव्यांग और विशेष बच्चों को सरक.ारी योजनाओं का लाभ मिले व ओआरओपी–1 और ओआरओपी–2 का लंबित भुगतान शीघ्र किया जाए। इस अवसर पर यूनियन के प्रधान कैप्टन ओम प्रकाश, उपाध्यक्ष गुरजीत सिंह (पहल), उपाध्यक्ष कैप्टन जे. आर. शर्मा, सचिव कैप्टन एस. डी. एम. दत्त, कैप्टन सुखराम डोगरा, कैप्टन एस. डी. पाठ और इंदरजीत शर्मा मौजूद रहे। कैप्टन ओम प्रकाश ने कहा कि केंद्र सरकार ने ओआरओपी लागू तो किया है, लेकिन अभी तक कई पूर्व सैनिकों को इसका पूरा लाभ नहीं मिल पाया है। उन्होंने बताया कि यूनियन सभी समस्याओं को एक रिपोर्ट के माध्यम से उच्च अधिकारियों तक पहुंचाएगी और समाधान के लिए प्रयास जारी रखेगी। कार्यक्रम में उपस्थित सभी पूर्व सैनिकों और उनके परिजनों ने इस आयोजन की सराहना की और उम्मीद जताई कि जल्द ही उनकी समस्याओं का समाधान होगा।

कठुआ में कारगिल विजय दिवस पर वीरों को श्रद्धांजलि, कठुआ विधायक डॉ भारत भूषण ने किया नमन

राज कुमार

कठुआ, कारगिल विजय दिवस के अवसर पर कठुआ में श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें कठुआ विधानसभा क्षेत्र के विधायक डॉ. भारत भूषण और एसएसपी कठुआ शोभित सक्सेना ने शहीदों को पुष्पांजलि अर्पित कर नमन किया।

यह कार्यक्रम जम्मू–कश्मीर पूर्व सैनिक कल्याण संघ कठुआ के अध्यक्ष कर्नल पी.एल. चौधरी की अगुवाई में जिला सैनिक कल्याण बोर्ड परिसर के पास प्रस्तावित युद्ध स्मारक स्थल पर आयोजित किया गया ।

इस मौके पर कर्नल चहल (जिला सैनिक कल्याण अधिकारी), कर्नल वेद प्रकाश शर्मा, कर्नल मनसोत्रा, कैप्टन पवन शर्मा, सुभाष चंद सूबेदार, कैप्टन प्रेम कुमार, मानद कैप्टन नसीब सिंह सहित कई पूर्व सैनिक मौजूद रहे, जिन्होंने देश के लिए विभिन्न सैन्य अभियानों में अहम भूमिका निभाई है।

कार्यक्रम में डिग्री कॉलेज कठुआ के एनसीसी कैडेट्स ने भी हिस्सा लिया और पुष्पांजलि अर्पित करने में सहयोग किया। इसी दौरान अभिनंदन शर्मा ने कारगिल वीरों की शौर्यगाथा पर एक प्रेरणादायक कविता प्रस्तुत की।

कार्यक्रम के दौरान विधायक डॉ भारत भूषण एनसीसी कैंडिडेट को सम्मानित करते

विधायक डॉ. भारत भूषण ने अपने संबोधन में कारगिल युद्ध के शहीदों के बलिदान को याद करते हुए कहा कि देश की अखंडता और सम्मान की रक्षा के लिए दिया गया यह बलिदान सदैव याद किया जाएगा। उन्होंने कठुआ में युद्ध स्मारक के निर्माण में हरसंभव सहयोग का आश्वासन भी दिया।

विशिष्ट अतिथियों द्वारा माउंट एवरेस्ट फतह करने वाले एनसीसी कैडेट मोहित कनेंथिया को भी सम्मानित किया गया।

बाद में विधायक, पूर्व सैनिकों और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने शहीदी चौक कठुआ और कैप्टन सुनील चौधरी स्मारक पर जाकर भी वीरों को श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर बड़ी संख्या में पूर्व सैनिक, एनसीसी कैडेट, कारगिल युद्ध में शामिल रहे वीर और मीडिया प्रतिनिधि उपस्थित थे।

गीत

बलविन्दर बालम

आया राखी का त्यौहार बालम
चाहत खुशियां बंधन प्यार।
आया राखी का त्यौहार।
सावन की पूर्णिमा उन्मेष।
आशीर्वाद देते है गणेश।
भाई बहना का इकरार।
आया राखी का त्यौहार।
बहना का तिलक स्नेह मिले।
सच्चे संकल्पों के फूल मिले।
मंगलकारी शुभ सत्कार।
आया राखी का त्यौहार।
यह दिन दृष्टि परिवर्तन का।
रिश्तों में पूजा अर्चना का।
आत्म दृष्टि में परिवार।
आया राखी का त्यौहार।
खिलते चारो और तबरूसुम।
अरूणोदय में एक तरन्नुम।
प्रतिष्ठित शानोदय गुलजार।
आया राखी का त्यौहार।
मात–पिता का अंर्तनाद मिले।
शुभ मंगल आशीर्वाद मिले।
जैसे देवालय के दीदार।
आया राखी का त्यौहार।
फसलों में दिव्य श्रृंगार।
मौसम का टूटा हंकार।
संदली मंजर है तैयार।
आया राखी का त्यौहार।
सर्दऋतु का है अभिवादन।
संपूर्ण होता है सावन।
उमरा नहीं करती तकरार।
आया राखी का त्यौहार
अतुल्य मौसम का अभिनंदन।
अंगार पुष्प चम्पा चंदन।
अर्जित अर्पित है कचनार।
आया राखी का त्यौहार।
सब धर्मों की इस मे श्रद्धा।
शुश्रषा होती है वर्षा।
भारत मां के यह संस्कार।
आया राखी का त्यौहार।
इस त्यौहार में आत्मतुष्टि।
सौंदर्य के प्रभ्रत्व में दृष्टि।
कृषिक के भरते भण्डार।
आया राखी का त्यौहार।
देवालयों में दीप शिखा है।
चारों और रूपवान दिशा है।
उमड़ रहा स्नेह का श्रृंगार।
आया राखी का त्यौहार।
बालम खुलते मंगल द्वार।
यह दिन सब को देता प्यार।
रिश्तों का माधुर्य सभ्याचार।
आया राखी का त्यौहार।

बलविन्दर बालम गुरदासपुर
ओंकार नगर, गुरदासपुर (पंजाब)
9815625409

1000 साल पुराने 'समाधि वाले बाबा' के कंकाल को मिला घर, क्यों है ये इतना खास?

एजेंसी

गुजरात में 15 मई को पांच घंटे की कवायद और 15 विशेषज्ञों की निगरानी के बाद 1000 साल पुराने कंकाल को वडनगर पुरातत्व अनुभव संग्रहालय में स्थानांतरित कर दिया गया. इस संग्रहालय का उद्घाटन इस साल जनवरी में किया गया था. 1000 साल पुराने कंकाल को 'समाधि वाले बाबाजी' कहा जाता है. इस कंकाल को मेहसाणा जिले से साल 2019 में खुदाई करके निकाला गया था. तब से इसे अस्थायी तंबू के अंदर रखा गया था. अब कंकाल को नया घर मिल गया है. वडनगर पुरातत्व अनुभव संग्रहालय के क्यूरेटर महिंदर सिंह सुरेला ने बताया– कंकाल को गुरुवार शाम 6 बजे के आसपास संग्रहालय में स्थानांतरित कर दिया गया है. इसे एहतियाती बैरिकेड के साथ रिसेप्शन क्षेत्र के पास ग्राउंड फ्लोर पर रखा गया है. वर्तमान में, यह प्रदर्शन के लिए नहीं है. जैसे ही निर्देश प्राप्त होंगे, संरक्षण के दृष्टिकोण से कंकाल की जांच के बाद, इसे संग्रहालय की गैलरी में स्थानांतरित करने की योजना बनाई जाएगी.

साल 2023 से ही कंकाल को वडनगर के पुराने शहर के बाहरी इलाके में सरक.ारी आवास के खुले मैदान में 12:15 फीट के तिरपाल और कपड़े के तंबू के अंदर रखा गया था. इससे पहले इसे आवास की सीढ़ियों के नीचे गलियारे में रखा गया था.

अधिकारियों ने बताया– कंकाल को टेंट से बाहर निकालने के लिए क्रेन का इस्तेमाल किया गया. खुदाई स्थलों पर

काम करने वाले 15 से ज्यादा एएसआई और राज्य सरकार के अधिकारियों की देखरेख में इसे एक ट्रेलर में ले जाया गया. इस प्रक्रिया में पांच घंटे से ज्यादा का समय लगा. 2019 में रेलवे लाइन के पार अनाज गोदाम से सटी बंजर जमीन से कंकाल की खुदाई की गई थी. इससे पहले गुजरात के पुरातत्व एवं संग्रहालय निदेशक पंकज शर्मा ने इंडियन एक्सप्रेस को बताया था– लोथल के संग्रहालय में भी कंकाल रखने पर विचार किया जा रहा है. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के वडोदरा सर्कल के पूर्व अधीक्षण पुरातत्वविद् अभिजीत आंबेकर, जो वडनगर उत्खनन से करीब से जुड़े थे, उन्होंने कहा था कि पिछले कई वर्षों में खोजी गई 9,000 से अधिक पुरावशेषों के साथ यह कंकाल गुजरात सरकार को सौंप दिया गया है. विशेषज्ञों का मानना घ्है कि यह कंकाल किसी ऐसे व्यक्ति का है जिसे बैठी हुई या 'समाधि' की स्थिति में दफनाया गया था, जो उस समय 'गुजरात में सभी धर्मों में' प्रचलित प्रथा थी. हेरिटेजरू जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी स्टडीज इन आर्कियोलॉजी में प्रकाशित वडनगररू ए थ्राइविंग कम्पोजिट टाउन ऑफ हिस्टोरिकल टाइम्स शीर्षक वाले एक पेपर में आंबेकर और अन्य ने इस खोज का वर्णन कुछ इस प्रकार किया था।

पूर्व अध्यक्ष तरसेम पाल सैनी का केंद्र सरकार पर तीखा हमला, किसानों और युवाओं की बदहाली पर जताई चिंता

सबका जम्मू कश्मीर

नगरी, नगरी म्यूनिसिपल कमेटी के पूर्व अध्यक्ष एवं कांग्रेस किसान संगठन के पूर्व जिला अध्यक्ष तरसेम पाल सैनी ने केंद्र सरकार पर तीखा हमला बोलते हुए कहा है कि मौजूदा सरकार हर मोर्चे पर विफल साबित हो रही है। उन्होंने महंगाई, बेरोजगारी, किसान हिता. ` की अनदेखी और बुनियादी सुविधाओं की कमी को लेकर सरकार की नीतियों पर सवाल उठाए।

तरसेम पाल सैनी ने कहा कि 15 दिन पहले स्वयं केंद्रीय कृषि मंत्री ने सार्वजनिक मंच से यह स्वीकार किया था कि नैनो यूरिया किसानों पर जबरन न थोपा जाए। इसके बावजूद जमीनी स्तर पर हालात नहीं बदले हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि नगरी क्षेत्र के कई दुक. ानदार अभी भी किसानों पर जबरदस्ती नैनो यूरिया थोपने का काम कर रहे हैं। यह न केवल किसानों के साथ धोखा है, बल्कि केंद्र सरकार के बयान की खुली अवहेलना भी है।

उन्होंने सवाल उठाया कि कृषि मंत्री के बयान के बाद भी केंद्र सरकार से जुड़े संबंधित कृषि कार्यालय ने अभी तक यह स्पष्ट नहीं किया है कि मंत्री के बयान पर कोई अमल हुआ है या नहीं। इससे यह संदेह पैदा होता है कि क्या यह बयान केवल किसानों को भ्रमित करने के लिए था या उस पर कोई ठोस कार्यवाही भी की जा रही है।

तरसेम सैनी ने कहा कि किसानों की हालत लगातार खराब होती जा रही है और हर साल उन्हें फसल का भारी नुकसान उठाना पड़ता है, लेकिन अब तक केंद्र सरकार किसी भी किसान को उचित मुआवजा नहीं दे सकी है। उन्होंने याद दिलाया कि 2014 में सत्ता में आने के बाद केंद्र सरकार ने किसानों की आमदनी 2022 तक दुगनी करने का वादा किया था, जो आज भी अधूरा है। एमएसपी (न्यूनतम समर्थन मूल्य) का मुद्दा भी सरकार ने पूरी तरह से लागू नहीं किया।

सैनी ने सरकार पर किसानों के आधुनिकीकरण के नाम पर दोहरी नीति अपनाने का आरोप लगाते हुए कहा कि जहां पहले किसान बैल से खेत जोतता था, आज ट्रैक्टर से खेती करता है, लेकिन उस पर भी 32ः टैक्स लगाया जा रहा है, जिससे किसान और अधिक आर्थिक दबाव में आ गया है।

उन्होंने भाजपा कार्यकर्ताओं पर भी निशाना साधते हुए कहा कि वे हर चौक–चौराहे पर "भारतीय जनता पार्टी जिंदाबाद" के नारे तो लगाते हैं, लेकिन देश के बेरोजगार युवाओं और बदहाल किसानों के मुद्दों पर पूरी तरह से चुप्पी साध लेते हैं।

अंत में तरसेम पाल सैनी ने कहा कि सरकार को जनहित के मुद्दों पर गंभीरता से काम करना होगा और बयानबाज़ी की बजाय ज़मीनी हकीकत को सुधारना होगा, वरना जनता इसका जवाब आगामी चुनावों में देगी।

कठुआ के विधायक डॉ भारत भूषण ने नगरी रोड को नाबार्ड में शामिल करने की उठाई मांग

सबका जम्मू कश्मीर

कठुआ के विधायक डॉ. भरत भूषण ने बुधवार को सिविल सचिवालय श्रीनगर में उपमुख्यमंत्री सुरिंदर चौधरी से मुलाकात की और कठुआ की चंगरां से नगरी तक की सड़क को नाबार्ड (राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक) योजना के अंतर्गत शामिल करने का आग्रह किया।

विधायक ने उपमुख्यमंत्री को अवगत कराया कि चंगरां से नगरी तक की सड़क जर्जर हालत में है, जिसे तत्काल मरम्मत और चौड़ा किए जाने की आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि इस सड़क की खराब स्थिति के कारण लगातार दुर्घटनाएं हो रही हैं और बीते वर्षों में कई कीमती जानें जा चुकी हैं।

डॉ. भरत भूषण ने बताया कि इस मुद्दे को विधानसभा में भी उठाया गया था और सरकार ने सदन में आश्वासन दिया था कि छ।ठ।त्क से धनराशि जारी होते ही इस सड़क को योजना में लिया जाएगा।

उन्होंने यह भी कहा कि पिछले 15 वर्षों से इस सड़क की मरम्मत नहीं हुई है और इसकी गंभीरता को लेकर मुख्यमंत्री को भी अवगत कराया गया है।

उपमुख्यमंत्री सुरिंदर चौधरी ने विधायक को आश्वासन दिया कि इस संबंध में शीघ्र आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

उपमुख्यमंत्री सुरिंदर चौधरी से औपचारिक भेंट करते हुए विधायक डॉ भारत भूषण

कहानी

'आर्मी वाला बेटा'

पुनीत गोयल

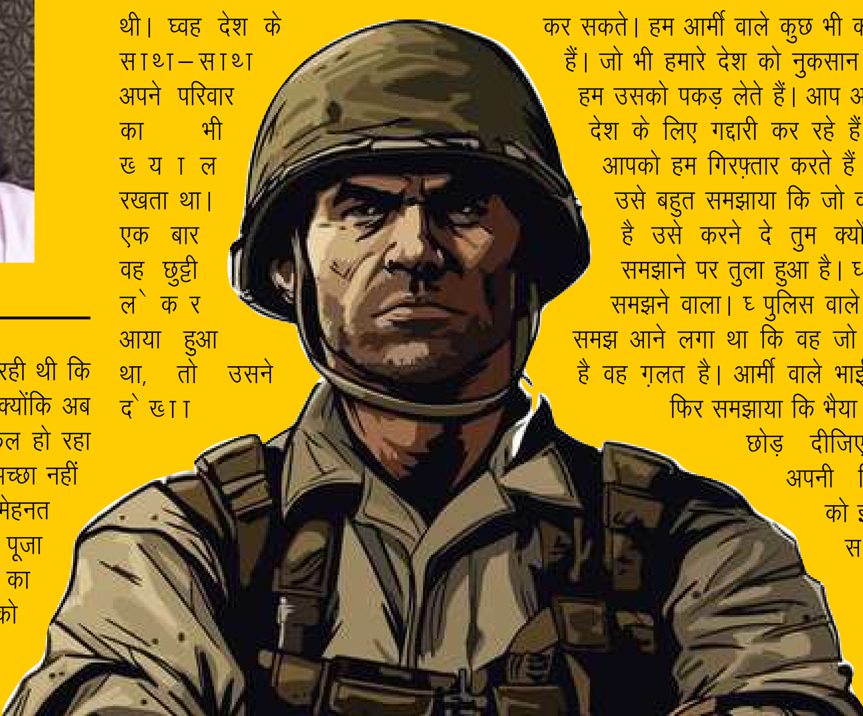

पूजा के तीन बच्चे थे। वह सोच रही थी कि अगर एक ही होता तो अच्छा था। क्योंकि अब तीनों का पालन पोषण करना मुश्किल हो रहा था। पति का भी काम कुछ ज्यादा अच्छा नहीं था। पूजा का पति पंकज भी बहुत मेहनत करता था। वह भी अपने घर खर्चे में पूजा का साथ देता था। पूजा सिलाई का काम भी करती थी और बच्चों को ट्यूशन भी पढ़ाती थी। धीरे–धीरे समय बीतने लगा बच्चे बड़े हो गए। किस्मत ने रंग दिखाया और एक बेटा आर्मी में, एक पुलिस में और बेटी एक बैंक में लग गई। घर भी अच्छा बन गया था। बेटी की शादी भी अच्छे घर में हो गई थी। दोनों बेटों की भी शादी बहुत अच्छे घरों में हुई थी। पुलिस में नौकरी मिलते ही बेटे के रंग ढंग कुछ बदल गए थे। वह अपने माता–पिता के साथ नहीं रहना चाहता था। उसने अपना अलग घर बना लिया था। आर्मी वाला बेटा 2 साल बाद कभी घर आता। बहु बहुत अच्छी थी वह पूजा और पंकज का बहुत ख्याल रखती थी। घ्वह देश के साथ–साथ अपने परिवार का भी ख्याल रखता था। एक बार वह छुट्टी लेकर आया हुआ था, तो उसने देखा कि उसका भाई पुलिस की वर्दी का ग़लत इस्तेमाल कर रहा है। उसने उसको बहुत समझाया लेकिन वह नहीं समझा। उसने सोचा कि अब इसको आर्मी वालों की ताकत दिखानी ही पड़ेगी। द्द आर्मी वालों को अपने देश से सबसे ज़्यादा प्यार होता है।

उसने अपने भाई के घर पर एक आर्मी की टुकड़ी भेजी और उसको गिरफ्तार करने के लिए बोला भाई बोला आप मुझे ऐसे गिरफ्तार नहीं कर सकते तो उसने कहा कि क्यों नहीं कर सकते। हम आर्मी वाले कुछ भी कर सकते हैं। जो भी हमारे देश को नुकसान देता है। हम उसको पकड़ लेते हैं। आप अभी हमारे देश के लिए गद्दारी कर रहे हैं इसलिए आपको हम गिरफ़्तार करते हैं। पूजा ने उसे बहुत समझाया कि जो वह करता है उसे करने दे तुम क्यों उसको समझाने पर तुला हुआ है। द्द वह नहीं समझने वाला। द्द पुलिस वाले भाई को समझ आने लगा था कि वह जो कर रहा है वह ग़लत है। आर्मी वाले भाई ने उसे फिर समझाया कि भैया यह काम छोड़ दीजिए। आप अपनी ज़िम्मेदारी को ईमानदारी से निभाईओ। पुलिस वाले ने कसम खाई कि मैं आगे से ऐसा कोई भी काम नहीं करूंगा और अपने भाई को गले से लगाकर बोला कि तो मुझे छोटा है मगर आज तूने मुझे बहुत बड़ा सबक दिया है आर्मी वालों को दिल से सलाम जो देश की सेवा करते हुए शहीद हो जाते हैं और अपने देश का नाम अमर करते हैं। जय हिन्द

पुनीत गोयल
पटियाला पंजाब

साप्ताहिक सबका जम्मू कश्मीर
"पत्रकारों की आवश्यकता"
'सबका जम्मू कश्मीर' हिंदी साप्ताहिक समाचार पत्र
के लिए जम्मू कश्मीर के सभी जिला के लिए पत्रकारों की आवश्यकता है इच्छुक पत्रकार संपर्क करें
योग्यता:
- पत्रकारिता में अनुभव
- उत्कृष्ट लेखन और संपादन कौशल
- सोशल मीडिया घराने में काम करने का अनुभव
अपना बायोडाटा ई.मेल करें
sabkajammukashmir@gmail.com
संपर्क नंबर :
6005134383

NOTICE

I, Teg Ali, S/o Reham Ali, R/o Mirpur Jaggo, Tehsil Nagri Parole, District Kathua (Jammu & Kashmir UT), do hereby inform the general public that the Registration Certificate (RC) of my motorcycle bearing Registration No. JK08L3905 has been lost on 28th July 2025 in the Nagri Parole area. I am in the process of applying for a duplicate RC from the concerned authorities. If anyone finds the lost document, they are kindly requested to return it to me or inform the nearest police station. I declare that if any person or authority has any objection to the issuance of a duplicate RC, they may contact the undersigned within 7 days of publication of this notice. Failing which, it shall be presumed that there is no objection.

साप्ताहिक
सबका जम्मू कश्मीर

लेह-लद्दाख के उपराज्यपाल कविंद्र गुप्ता ने माता वैष्णो देवी के दरबार में टेका माथा, भाजपा कार्यकर्ताओं ने किया भव्य स्वागत

रोहित शर्मा

कटराः लेह–लद्दाख के उपराज्यपाल कविंद्र गुप्ता मंगलवार को श्री माता वैष्णो देवी के पावन दरबार में माथा टेकने कटरा पहुंचे। इस दौरान भाजपा कार्यकर्ताओं ने उनका भव्य स्वागत किया। कटरा में उनके आगमन पर स्थानीय प्रशासन के अधिकारी और कई गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित रहे।

उपराज्यपाल गुप्ता के साथ मंदिर में पूजा–अर्चना के दौरान श्री माता वैष्णो देवी विधानसभा क्षेत्र के विधायक बलदेव राज शर्मा, जिला रियासी के विधायक कुलदीप राज दुबे, भाजपा जिला अध्यक्ष रोहित दुबे, डीडीसी सदस्य सराफ सिंह नाग, पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष शशि गुप्ता और अन्य भाजपा पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता मौजूद रहे।

उपराज्यपाल ने मंदिर परिसर में विधिवत पूजा कर देशवासियों की सुख–शांति व समृद्धि की कामना की। इस दौरान श्राइन बोर्ड के अधिकारियों ने उन्हें यात्रा व्यवस्था, सुरक्षा इंतजाम और सुविधाओं की जानकारी दी।

उपराज्यपाल के आगमन को लेकर कटरा में श्रद्धालुओं और स्थानीय नागरिकों में खासा उत्साह देखने को मिला। भाजपा नेताओं ने इसे क्षेत्र के लिए गौरवपूर्ण क्षण बताते हुए कहा कि यह कटरा के धार्मिक और पर्यटन महत्व की बढ़ती प्रतिष्ठा का प्रतीक है।

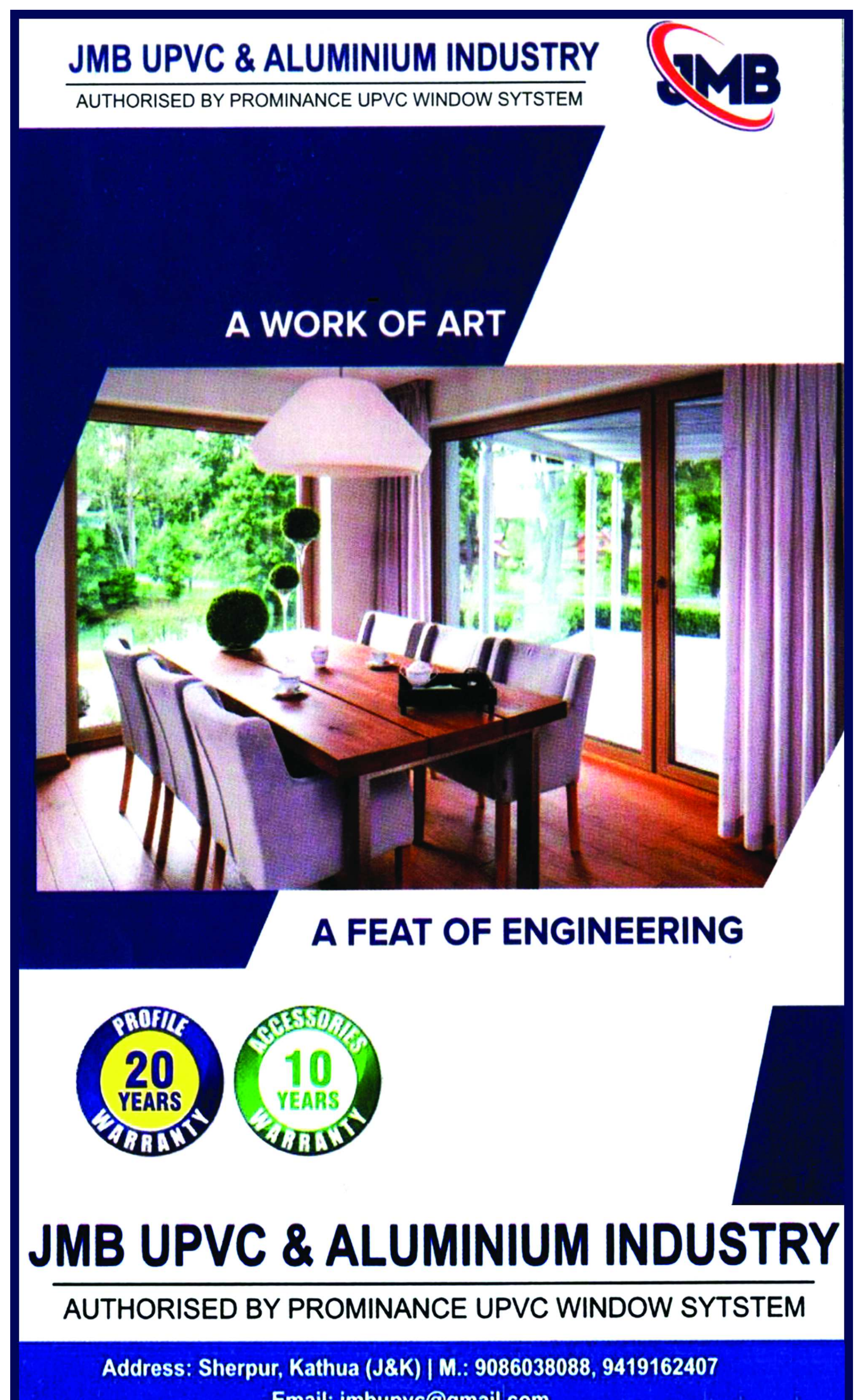

स्वामित्व, मुद्रक, प्रकाशकः राज कुमार द्वारा एम/एस डी. आर प्रिंटिंग प्रेस, बैन बजाल्ता, तहसील जम्मू से मुद्रित एवं नगरी पैरोल नगरी, जिला कठुआ, जम्मू और कश्मीर पिन.कोड नं: 184151 | संपादकः राज कुमार